

मुद्रक—

इश्वरलाल जैन स्नातक

आनन्द प्रिंटिंग प्रस,

गोपालजी का रास्ता,

जयपुर सिटी ।



ग्रन्थमाला की पुस्तक मिलाने का पता—

१—रतनचन्द कोचर

हुन्सीगरो के भैरु का रास्ता

जोहरी बाजार जयपुर सिटी

२—कान्तिलाल कालीदास शाह

नं० ३३ बड़तल्ला स्ट्रीट

बल्लकप्ता नं०

ॐ श्री धीतरागाय नमः ॐ

त्रिकाल-देवकन्दन विधि

श्रामायिक पाँच विधि सहित

—००—

सम्पादक—

रतनचन्द कोचर

3122
ज ६१

मुन्निगरो क भैरवजी का रास्ता,
जौहरी बाजार, जयपुर।

—००—

प्रकाशक—

श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला,

जयपुर।

— ॐ —

मुख्य बारह आना

घीर सं० ४३६	} प्रथम संस्करण	} वि० सं० २००७
आत्म सं० ५५		

दो शब्द

प्रथमाला की तरफ में 'निकाल देव वन्दन विधि सामायिक पौषध विधि संहित' नामक पुस्तक भाई श्री रत्नचन्द्रजी कोचर द्वारा सग्रह की हुई प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में सामायिक पौषध देववन्दन इत्यादि करने की क्रिया पूर्णरूप से लिखा गया है जिससे प्रत्येक सज्जन निम्नो क्रिया विधि का सही ज्ञान नही हो सही तरीके से पार सकेगा। इस की आवश्यकता को हम काल दिन से अनुभव कर रहे थे, परन्तु कागज की कमी और सरकार द्वारा कागज पर नियंत्रण होने से पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो सका। हमारा विचार इस पुस्तक को अधिक से अधिक फायदा छापने का था परन्तु अधिक सहयोग न मिलने से फिलहाल थोड़ी ही पुस्तकें छाप रहे हैं। परन्तु अगर इसकी उपयोगिता सिद्ध हुई तो दूसरा संस्करण जरूरी ही प्रकाशित कर देंगे।

इस पुस्तक को सग्रह करने का श्रेय आभा रत्नचन्द्रजी कोचर को है। और इन्हीं के प्रसंग से ही श्रीमान् बाहीलाल जीवरान शाह पाननपुर निवासी ने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक की शुद्धि अशुद्धि ठीक की है तथा प्रस्तावना भी लिखी है जिमने लिये दोनों सज्जन हार्दिक वन्दना के पात्र हैं। साथ ही भाई ईश्वरलालजी जैन ने अपने "आनन्द प्रेस" में इसको छापने और उसके मुद्रक सशोधन इत्यादि में जो सहायता दी है उसके लिये हम उनकी सराहना करते हैं। हम आशा है कि इस पुस्तक से सज्जनगणों का लाभ उठाकर हमारा परिश्रम को सफल करेंगे।

इस पुस्तक में शुद्धियाँ आ पूर्ण ध्यान रखते हुए भी नोट दोष से या प्रमादयश को भूल चूक रहे गइ हो उनकी सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। इति शुभम्। निर्मात—

प्रबंधक—श्री जिनवाणी प्रचार प्रथमाला, जयपुर।

❀ प्रस्तावना ❀

महोदयप्रणालाय, सर्वोदयदायिने ।

सर्वलघुनिधानाय, श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

इस “विक्रम दयानन्दन विधि-सामायिक पौषप विधि महित” नाम की पुस्तिका “श्री निनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला” जयपुर की तरफ से प्रकाशित की जा रही है यह बड़े हर्ष की बात है । जो व्यक्ति विधि विधान के लिये गति तो रखता है लेकिन अनपठित होने के कारण या घरा क विम्वृत होने के कारण स्त्रिया नहीं कर सक्ता उनके लिये यह पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी, इसमें मदद नहीं ।

गुजरात सौराष्ट्र में ऐसी पुस्तकें गुजराती भाषा में दली जाती हैं किन्तु ये गुजराती भाषा भाषियों के लिये ही उपयोगी हैं लेकिन हिन्दी भाषा भाषियों के लिये गमी पुस्तिका का अत्यन्त आवश्यकता थी ये कमी अब इस “ग्रन्थमाला” की तरफ से प्रकाशित की हुई इस पुस्तिका से पूरा हो जायगी ।

आगे से तो इस जडवाद के जमान में धर्म क्रिया के प्रति जो अभिगच्छि होनी चाहिये वो कम होती जा रही है । जो क्रिया कर रहे हैं वे क्रिया का मर्म विशेष कम समझते हैं । परिणाम यह होता है कि क्रिया उस वृत्ति ज्यादा देखने में नहीं आती । आन तो एतन्त ज्ञान को

मानने वाले या परान्त क्रियावादी बहुत मिलते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञान के साथ २ क्रिया होने से ही उद्धार है । महान पूर्वधर श्री मद् उमास्वामिगुरु “तत्त्वार्थ ध्वज” में फरमाते हैं कि—

सम्पददर्शनं ज्ञान चारित्र्याणि मोक्षमार्ग —

ज्ञान क्रियाभ्या मोक्ष — जैसे समुद्र में तूतने का ज्ञान तो है किन्तु हाथ पाय नहीं दिलाने से बट कर्मा पार उत्तर सरुता है ? तात्पर्य कहने का यह है कि ज्ञान और क्रिया दोनों ही साथ में होने से ही आत्मोन्नति का जीव साधक बन सकता है ।

मेरा खयाल है कि इस छोटीसी पुस्तिका के लिये अभी प्रस्तावना क्यों ? लेकिन जो लोग ज्ञान के प्रति परान्त ध्यान रखते हैं उनके लिये प्रथम क्रिया मरि होने की आवश्यकता है और क्रिया रुचि होने के बाद जो विधि विधान से अनभिज्ञ है उनके लिये ऐसी पुस्तिका सहायतारूप होगी । ये किंचित बतलाने के लिये ज्यादा विवेचन किया गया है ।

मुझे यह प्रस्तावना लिखने का जो अवसर दिया गया है उसके लिये “श्री विनयाणी प्रचार ग्रन्थमाला” और मेरे दीर्घकालीन मित्र भाई रतनचन्दजी कोचर का आभारी हूँ ।

वि० स० २०१७ आसाद दूना

शुक्ल पंचमी गुठवार

भा० २० जुलाई सन् १९५०

भवदीय—

बाटीलाल जीवरान शाह,
पालनपुर (गुजरात)

(पौषध विधि)

जो भौतिक आविष्कार पौषध करना चाहे उनको मुखद्वारा प्रतिप्रमाण करना चाहिये, पौषध करने में इस प्रकार यन्त्राग्नि उत्पन्न होना चाहिये—मुखपति, चरधला, उनी आसन, शुद्ध घोनी, अनासन, मात्रा के लिये जाने समय पहाने की घोली, नाक साफ करने का रुमाल या गेहिया, सिर पर धन पर ओढ़ने के लिये कम्बल, सधारिया—भोने के लिये, दहामण, गरम पाना, गरम चूना पाना में डालने के निष्ठ, सोने वर दोनों ननों के छदा में नीय जलु का पालना के निष्ठ कुदल या ना रुट के दो पीये ।

भौतिक आविष्कार पौषध करने से पहिले शुद्ध यन्त्र पहान कर चौकी (याजोठ) आदि न्य स्थान पर पुनः उपमाला (नयकार धाली) आदि रखकर, जमीन पर असन बिछाकर, चरधला और मुखपति लेकर बैठे । बैठ के बाँये हाथ में मुखपति मुक्के आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुनः आग्नि की स्थापना के समुग्न करके नयकारमंत्र पढ़ें ।

नमो अरिहताय । नमो मिद्धाय । नमो आयग्याय ।
नमो उज्ज्वापाय । नमो लोए सत्रमाहृणं । एमो पच
नमुकारो । सत्रपायप्पणामणो । मगलाय च मयमि । पदम
दम मगल ॥१॥

(नेमे एक नयकार गिनकर)

पचिन्दियमवगणो, तद्व नरिड्यमरेरगुत्तिप्रो । चउ-
 विहकमायमृको, इअ अद्दाम गुणेदि मजुत्तो ॥१॥ पच मह-
 द्यपजुत्तो पचरिहायारपानखममत्थो । पचममिथो तिगुत्तो,
 छत्तीमगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(तेसे पचिन्दिय कहे, यत्ति प्रथममे एव स्थान पर आगत्य
 प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहा पचिन्दिय नहीं रहना । पीछे)

इद्दामि एवाममणो । पदिउ जारणिज्जाण निमीहि-
 ज्जाण मत्थगगु उदामि ।

इद्दाकारण सदिमह भगवन् ! इरियारहिय पडिष-
 मामि ! इच्छ इच्छामि पटिक्कमिउ, इरियारहियाण, रिग-
 इणाण गमणागमणे पाणवमणे वीयवमणे हरिपवमणे
 थोसा उत्तिग पणम दग मट्टी मवटामताणा सक्कमणे, जे
 म जीरा रिगदिया, णगदिया, वडदिया, नेडदिया, चउरि-
 दिया, परिदिया, थमिदिया, रत्तिपा, हेमिया, मघादिया,
 मघद्विया, परिवारिया, फिलामिया, उदरिया, ठाणाथो ठाण
 मकाभिया, तीरियाथो वरगेरिया तस्म मिञ्छामि दुव्वड ।

तस्म उत्तरिहरणेण, पायळ्ळित्तरणेण, रिमोहीर-
 खेण, रिमट्टीरखेण, पाराण वम्माण निग्गयखट्ठाए, ठामि
 काउस्समणे ।

अन्नत्थ ऊम्मिण्ण, नीममिण्ण, तामिण्ण, छीण्ण,
 नमाण्ण, उट्टुण्ण, रावनिमण्णेण, ममलिण पित्तमुञ्छाए,

सुदृमेहिं अगमचालेहिं, सुदृमेहिं ऐलमचालेहिं, सुदृमेहिं
दिद्विमचालेहिं, एरमाङ्गहिं आगारहिं अमग्गो अपिराहियो
दृज्ज मे ऋउम्मग्गो । जाय अग्गिताए भगवताए, नमुरा-
एण न पारमि ताए ऋए टाणेण मोगेण भग्गेण अप्पाए
वामिरामि ।

(यदा एक लोगम्म जा या चार नरकार का काग्ममग करना
पीछे प्रगट लोगम्म नदना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगम्म उज्जोअगर, धम्मविथपर निग्गे । अग्गित
कित्तइस्स, चउर्वाम पि केवली ॥१॥ उगममनिय च वद,
समग्गमभिणुदण च सुमइ च । पउमप्पद सुषाम, निण च
चदप्पह वद ॥२॥ सुणिहिं च पुण्डित, मीअल्ल-मिज्जम
वासुपुज्ज च । विमलमणुव च जिण, धम्म मतिं च
उदामि ॥३॥ कुयु अर च मत्ति, वद सुणिसुअय नमि-
निण च ॥ उदामि गिद्विनेमि, पम्म तह वदमाण च ॥४॥
एव मए अभिदुआ, विदुयस्यमल्ल पढीणनरमग्गण । चउ-
र्वाम पि जिणवरा, विथपरा मे पमीयतु ॥५॥ मित्थि-
अण्णिय-महिया, जे ए लोगम्म उत्तमा मिद्धा । आरग्गो
हिलाम, ममाहिअरमुत्तम दितु ॥६॥ चदग्गु निम्मलयर,
आइच्चेसु अहिय पयामयग । माग्गवरग्गभीग, मिद्धा मिद्वि
मम निमित्तु ॥७॥

(पीछे ग्यमाममण देना)

इच्छामि रामाममणो वदिठ जायणिज्जाए निमीदियाए
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! पौपध
मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छ”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे रामासमण नेना—)

इच्छामि रामाममणो वदिठ जायणिज्जाए निमीदियाए
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् पौपध
सदिसाहुँ ? “इच्छ” इच्छामि रामाममणो वदिठ जायणि-
ज्जाए निमीदियाए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह
भगवन् ! पौपध ठाऊँ “इच्छ”

ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़कर एक नवकार नीचे मुनय गिनना ।

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आपरियाण ।

नमो उज्जमायाण । नमो लोए सत्र साइण । एसो पच

नमुकारो । सत्र पापप्पणामणो । मगलाण च सवेमि ।

पडम हउइ मगल ॥

[पीछे ‘इच्छ’कारी भगवन् पसय कती पौपध ऋद्धक उचरायोनी
एसे धोलकर निम्न पोसह ऋद्धक स्वय उचर यन्ति गुरु या बडील
हो तो वे उचरावें]

“करेमि भते ! पोसह, आहार—पोसह देसओ सत्रओ,
सरीरमजार पोसह सत्रओ, बभचेर पोसह सत्रओ, अत्रा-
वार—पोसह सत्रओ, चउव्विह पोसहे ठामि । जायटिरम ?

१ सिर्फ जिनका पौपध करना हो तो ‘जायदियम’ जिन रात
का करना हो तो ‘जाय अहोरत्त’ और सिर्फ रातका करना हो तो
‘जायसेसदियम अहोरत्त’ कहना चाहिये ।

पञ्जुगामामि दृग्निह तिरिहण, मण्येण वायाए रायेण न
करेमि, न कारवेमि । तस्म भते ! पट्टिक्कमामि, निंदामि,
गरिहामि अण्णाण वोत्तिरामि ॥ १ ॥”

इच्छामि एमाममणो वट्ठिउ जावणिज्जाए निर्मीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् !
सामायिक सुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छ”

(जैसे कहकर सुहपत्ति पडिलहना । पीछे)

इच्छामि एमाममणो वट्ठिउ जावणिज्जाए निर्मीहि
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् !
सामायिक सदिसाहु ? “इच्छ” । इच्छामि एमाममणो
वट्ठिउ जावणिज्जाए निर्मीहिआए मत्थएण वदामि ॥
इच्छाकारेण मदिमह भगवन् ! सामायिक टाउ ? “इच्छ”
(जैसे कहकर दोनों हाथ जोड़कर एक नयनार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहताण । नमो मिट्ठाण । नमो आयसि-
याण । नमो उरज्झायाण । नमो लोण सन्नसाहण ।
एमो पच्च नमुकारो । सय पाउप्पणामणो । मगलाण च
सत्तमि । पढम हय मगल ॥

[पीछे ‘इच्छकारी भगवन पसाय करी सामायिक दहक उभरावोजी
जैसे झोलकर ‘करमि भत’ स्वय उभर याद गुन वा उडील हो तो
चे उभरौ]

करमि भते । सामाड्य, सायज्ज जोग पद्यमामि । जाय
पोमह पज्जुगामामि, दुग्धिं निग्धिण्ण मयेण सायाए
साण्ण न करेमि न साय्वेमि तम्प भते । पटिवमामि
निदामि गरिहामि अण्णाण वोमिमामि ॥

[पीछे]

इच्छामि समाममणो वट्ठि जायसिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन्
येसणे सदिमाहु ? “इच्छ” इच्छामि समाममणो वट्ठि
जायसिज्जाए निमीहिआए मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण
सदिमह भगवन् येसणे ठाउ ? “इच्छ” इच्छामि समाम
मणो वट्ठि जायसिज्जाए निमीहिआए मत्थएण उदामि ॥
इच्छाकारेण सदिमह भगवन् मज्झायमदिमाहु ? “इच्छ”
इच्छामि समाममणो वट्ठि जायसिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् मज्झाय
रु ? “इच्छ”

[एम पहनर दोना हाय चौडकर तीन नयनार गुणना]

इच्छामि समाममणो वट्ठि जायसिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! बहुवल

यत्ति पौषध म राइ प्रतिमण कर तो अट्टाईनेसु सूत्र पढने
के पूर्व दो समाममण कर बहुवल सत्तिमाहु और बहुवल करमि,
का अतिशय न ।

मदिमाहें ? “इच्छ” इच्छामि सुमाममस्यो यदि नगरि-
 ज्ञाए निर्माहिगए मत्यण्ण वदामि ॥ इच्छा कारेण
 सदिमह भगरन् ! वहुवेल मरेमि ? “इच्छ”

इच्छामि सुमाममस्यो यदि नगरि-ज्ञाए निर्माहिगए
 मत्यण्ण वदामि ॥ इच्छा कारेण सदिमह भगरन् पटिलेहण
 करू ? “इच्छ”

पीछे मुहपत्ति, चरपला, आमन, कणेण, (सूत की प्रागर्ही) ।
 और धोती, ये पाच चाने पसिलेहे । पाट पसिलेहण की हूँ कहे
 पटिन स और हमके गद— पुन मयाममस्य मर

अन्नस्य उममिएण, नीसमिएण, रामिएण, छीएण,
 जमाइएण, उडुएण, जयनिमग्गेण, ममलिए पित्तमुच्छ्राए,
 सुट्टुमेहिं अगमचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसचालेहिं, सुट्टुमेहिं
 दिट्ठिमचालेहिं, एरमाइएहिं आत्तागहिं अमग्गो अरिगहिंओ
 हुज्ज मे फाउस्मग्गो । जाय अरिट्ठाण भगवताण, नमुफा-
 रेण न पारेमि ताव काय ठाण्हेण मोण्हेण भाण्हेण अप्पाण
 धोमिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नयकार का फाउस्मग्ग करना
 पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतिथ्यपरे निखे । अरिट्ठे
 नित्तइस्स, चउवीस पि केवली ॥१॥ उमममज्जिय च वद,
 समयमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पइ सुपास, जिण च
 चदप्पइ वद ॥२॥ सुविहि च पुण्फदत्त, सीअल निज्जस
 वासुपुज्ज च । निमलमग्गत च जिण, धम्म सत्ति च
 वदामि ॥३॥ कुट्टु अर च मल्लि, वद मुखिसुत्तय नमि-
 निण च ॥ वदामि रिट्ठेनेमि, पाम तइ वदमाण च ॥४॥
 एव मए अभियुआ, विट्ठयरयमला वहीणजरमरणा । चउ-
 वीस पि जिणवरा, तिथ्यपरा म पमीयतु ॥५॥ क्खित्तिय-
 वदिय-मदिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-
 हिलाम, ममाहिवरमुत्तम ण्ठित्तु ॥६॥ चदमु निम्मलपरा,
 आउधेसु अदिय पयासपरा । सागरवरगमीरा, सिद्धा सिद्धिं
 मम ण्ठित्तु ॥७॥

(पीछे गमासमण देना)

इच्छामि समागमणो यदिउ जागणिज्जाण निर्मीहिआए
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् । पमाय
फरी पडिलेहणा पडिलेहायोनी ? “इच्छ”

एम्मा कहकर ब्रह्मचर्य प्रवधारी जिम्मी बट्टे के उत्तरामन की
पडिलेहना करे । पीछे

इच्छामि समासमणो यदिउ जागणिज्जाण निर्मीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् ।
उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छ”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि समासमणो यदिउ जागणिज्जाण निर्मीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् ।
उपधि मदिसह ? “इच्छ” । इच्छामि समासमणो
यदिउ जागणिज्जाण निर्मीहिआए मत्थएण वदामि ॥
इच्छाकारेण मदिसह भगवन् । उपधि पडिलेहुँ ? “इच्छ”

कहकर प्रथम पडिलेहना से थानी रहे हुए उत्तरामन (दुपट्टा
मात्रा (पेशाव) करने जानेका धम्र और रात्रि-पौषध करना हो
तो सवारिया, कम्बल बगैरह धम्र पडिलेहते । पीछे डहामण
लेकर पडिलेहण करके फिर—

इच्छामि समासमणो । यदिउ जागणिज्जाण निर्मीहि-
आए मत्थएण

इन्द्राकरेण सदिमइ भगवन् ! इरियारहियं पडिक-
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिकमिऊ, इरियारहियाए, विराह-
णाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओमा उत्तिग-यणग-दग-मट्टी-मक्कडासत्ताणा सरुमणे, जे
मे जीरा निराहिया एगिंदिया वइदिया, तेइदिया, चउरिं-
दिया, पच्चिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेमिया, मघाइया,
सघइया, पणियारिया, रिन्तामिया, उदिया, ठाणाओठाण
सकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उतरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण रिसोहिक्कणेण,
निमल्लीकरणेण, पाणाण कम्माण निग्घायखट्ठाए, ठामि
काउस्सग्ग ॥

अन्नस्य उत्तसिएण, नीत्तसिएण, त्तामिएण, छीण्ण,
जमाइएण, उट्ठुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,
सुट्ठुमेहिं थगमचालेहिं, सुट्ठुमेहिं खेत्तमचालेहिं, सुट्ठुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एग्गमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अगिराहित्थो
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुक्का-
रेण न पारमि ताव काय ठाणेण मोणेण भाणेण अग्गाण
वोमिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
बीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोमगरे, धम्मवित्थयर जिणे । अरिहते

कित्तइस्स, चउरीम पि केउली ॥१॥ उमभमजिअ च वद,
 सभउमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पइ सुपास, जिण च
 चउप्पइ वंद ॥२॥ सुगिहिं च पुप्फदत्त, मीमल मिज्जस
 वासुपुज्ज च । विमलमणत्त च जिण, धम्मं मज्झिं च
 वदामि ॥३॥ इधु अर च मल्लिं, वदिं सुणिसुत्तय नमि-
 जिण च ॥ वदामि रिद्धनेमिं, पास तह वदमाण च ॥४॥
 एउ मण अमिउभा, विहुपरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
 रीम पि विणवरा, वित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिअ-
 यदिय-महिपा, ज ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आहग्गो
 हिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदसु निम्मलयरा,
 आइस्सेसु अहिय पपासपरा । सागररगभीरा, मिद्धा मिद्धि
 मम दिमतु ॥७॥

पूजा कपरा निकाल उसकी रखना और उत्तम सचित्र
 एवेन्द्रिय जीव का बहुतकर निकल तो गुरु से आलोचना लेना
 और प्रेम जीव निकलें तो उसकी रक्षा हो बड़ा रखना और
 ध्यापनाचार्य के सामने उसी जगह रखे होकर फिर—

इच्छामि सुमाममणो वदिउ जायणिज्जाण निसीहिभाए
 मत्तयण उदामि ॥

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्क
 मामि इच्छ । इच्छामि पडिक्कमित्त, इरियावहियाण विराड-

गाण । गमणागमणे, पाण्डवमणे, वीषवमणे, हरियकमणे,
श्रोमा उतिग-पणग-दग-मड्डी-मशडासताणा मरुमणे, ज
म जीरा गिराडिया एगिडिया उडडिया, तेडंठिया, चउरि-
डिया, पचिडिया, अभिडिया वत्तिया, लेमिया, सघाडिया,
सघडिया, परिपायिया, किलामिया, उडरिया, ठाणाओटाण
मरामिया, जीरियाओ वरोरिया तस्य मिच्छामि दूड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायिद्धत्तरणेण रिमोहिरणेण,
रिसलीरणेण, पाराण इम्माण निग्घायण्ढाण, ठामि
राउस्सग ॥

अवत्थ उगमिएण, नीयमिएण, दामिण्ण, छीएण,
जमाडण्ण, उड्डण्ण, वायनिमग्गेण, भमलिण पित्तमुच्छ्राए,
मुद्दमेहि अगमचालेहि, मुद्दमहि गेलमचालेहि, मुद्दमहि
गिडिमचालेहि, एगमाडण्हि आगारेहि अमग्गो अरिगहिओ
हुज्ज मे राउस्सग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुका-
रण न पारेमि ताव काय ठायेण मोयेण भायेण अप्पाण
वोमिरामि ।

(यहा एव लोगस्त का या चार नउकार का वाउस्सग करना
पीड प्रगट लोगस्त कहना, वह नीचे लिख अनुसार)

लोगस्म उज्जोप्रगर, धम्मतित्थयर चिले । अरिहत
कित्तइम्मं, चउरीमं पि केवली ॥१॥ उयममजिय च उड,
ममवमभिणुदम च सुमइ च । पउमप्पह सुपाम, जिग च

चदप्पद धट ॥२॥ सुनिहि च पुष्पदत्त, सीमल मिज्जम
 वासुपुज्ज च । विमलमणत्त च निण, धम्म सति च
 वटामि ॥३॥ कुट्टु अर च मत्ति, उट्टे सुणिसुत्तय नमि-
 जिण च ॥ उट्टामि गिट्ठनेमि, पाम तह उट्टमाण च ॥४॥
 ग्ग मए अभिधुआ, पिण्यग्गमला पहीणनग्गमणा । चउ
 नीम पि जिणररा, नित्ययर मे पमीयतु ॥५॥ त्तिपि-
 वदिय महिया, जे ण लोएस्य उत्तमा मिट्ठा । आत्तमागे
 हिलाम, समाहिवरमुत्तम त्तु ॥६॥ चट्सु निम्मलयर,
 आट्ठेसु अट्ठिय पयामयर । सागरवग्गभीरा, मिट्ठा मिट्ठि
 मम टिमतु ॥७॥

नाम म तीर नगह “अणुनागह जस्सुग्गहो” यह काजा
 परम्परा (हालत) और “जेमिरे” तीन दफ यह फिर पहिल
 की उगह आयर मयर का देव यत्न करना सो इसी पुस्तक में है ।

नाम म जय छह उही दिन नाम तब पउत्तु पोरिसी पडे ।

पउत्तु-पोरिसी की विधि

इच्छामि एवमममसो उट्ठि जायणिज्जाण निर्माहिआण
 मत्थण्ण वटामि ॥ इच्छासारेण मदिमह भगवन् । बहुपडि-
 पुण्णा पोरिसी १ इच्छं

इच्छामि एवमममसो उट्ठि जायणिज्जाण निर्माहि-
 आण मत्थण्ण वटामि ॥ इच्छासारेण मदिमह भगवन् ।
 इगियावदिय पडिकमामि इच्छ । इच्छामि पडिकमिउ,

हरियाग्रदियाण विराहणाए । गमणागमणे पाणामणे,
 वीपवमणे, हरियवमणे, योगा उत्तम-पमग दग मने
 मगडामताणा सकमणे, जे मे जीरा विरादिया णमदिया
 घेददिया, तेददिया, चउरिंदिया, परिंदिया, अभिइय
 यतिपा, लेमिया, मघाड्या, मघाड्या, पगियागिया,
 किलामिया, उदरिया, ठाणाओ ठाणु मकामिया, जीवियाओ
 ववरोरिया तस्त मिन्द्रामि दुवडं । तम्म उत्तरीररणेण, पाप-
 च्छित्तकमणेण, विसोहीररणेण, विसोहीररणेण, पाप-
 कम्मण निग्यायणद्वारा, ठामि काउम्मग ॥

अथ उममिण्ण, नीममिण्णं, छाभिण्ण, छीण्णं,
 जमाइएण उड्डुएण, पापनिमग्गेण, ममलिण, पित्तमुच्छ्राण,
 सुदुमेइ अगमचालेइ सुदुमेइ सेलमचालेइ, सुदुमेइ
 दिड्डी सचालेइ, प्यमाइएइ आगारेइ अमग्गे अविताइओ
 इज्ज मे काउस्तग्गो । जाय अरिइताण मगराण नमु
 वारेणं न पारेमि, ताय कायं ठाणेण मोणेण भाणेण
 अप्पाण वेमिरामि ।

[एक लोगस्स या चार नवकार वा काउस्तग्ग करना काउ
 स्तग्ग पारके प्रगट लोगस्स बहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिट्ठिअरे निणे । अरिइते
 नित्तस्म, चउरीम पि केवली ॥१॥ उसममनिअ च वंद,
 सभवमभिण्णदण च सुमइ च । पउमप्पइ सुपास, जिण च

चदप्पहं वद ॥२॥ सुविहिं च पुप्फटत, सीअल-मिज्जम
वासुपुज्ज च । विमलमण्य च जिण, धम्म मतिं च
वदामि ॥३॥ कृपु अर च मग्नि, वदे सुगिसुव्वय नमि-
निण च ॥ वदामि रिड्ढनेमिं, पाम तद्द वदमाण च ॥४॥
एव माण अभिजुआ, रिड्ढयस्यमला पहीणजरमरणा । वउ-
पीम पि जिणरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ मित्थिय-
वदिय-महिमा, जे ए लोगम्म उत्तमा सिद्धा । आम्मगो-
हिलाभ, समाहिणमुत्तम इतु ॥६॥ वदेमु निम्मलपरा,
आट्ठेसु अदिय पयासपरा । सागररगभीरा, मिद्धा सिद्धिं
मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि सुमाममणो वदिउ जावणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमद्द मगगन् ।
पडिलेहण रू ॥ “इच्छ”

तेमे कह कर मुहपति पडिलेहना । पीछे गुरु महाराज हो से
चनको विधि संहित वन्दना करना, यदि गुरु महाराज के सार
राइ प्रति क्रमण न किया हो तो गुरु वन्दन इस प्रकार कर ।

★ गुरु वदन ★

इच्छामि सुमाममणो वदिउ जावणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥

इच्छाकारेण सदिमद्द मगगन् इरियावदिय पडिक-
मामि “इच्छ” । इच्छामि पडिकमिउ, इरियावदियाए, निरा

हृत्पाण गमलागमणे पाणवमणे वीयवमणे हरिपवमणे
 थोसा उत्तिग पणग दग मट्टी मक्कडामताणा सरुमणे, जे
 मे जीवा गिराट्टिया, एगिट्टिया, बडदिया, तेडदिया, चउरि-
 दिया, पण्डिया, अभिहया, रत्तिया, लेमिया, सधाडया,
 मधट्टिया, परियागिया, विलाभिया, उदिया, ठाणाथो ठाण
 सरामिया, जीगियायो बवरोगिया तम्प मिच्छामि दुक्कट ।

तस्स उत्तरीकरणेण, पापच्छिन्नकरणेण, निसोढीकर-
 णेण, विमल्लीनकरणेण, पापाण कम्माण निग्घपणट्ठाए, ठामि
 फाउस्सग ।

अचत्थ उमसिएण, नीमसिएण, रामण्ण, छीण्ण,
 जमाइण्ण उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिण, पित्तमुच्छाए,
 सुट्टुमेहि अगमचालेहि सुट्टुमेहि सेलमचालेहि, सुट्टुमेहि
 ण्ढी सचालेहि, एमएहि आगारेहि अमग्गो अनिगहिओ
 हुज्ज मे फाउस्सग्गो । जार अरिहताण भगवताण नमु-
 वारेण न पारेमि, तार काय टाण्ण मोखेण भाखेण
 अप्पाण वोमिरामि ।

[एक लोगस्स या चार नवकार का फाउस्सग करना फाउ-
 स्सग पारने प्रगत लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, घम्मनित्थियर निणं । अरिहते
 कित्तडस्स, चउरीम पि केरली ॥१॥ उममपनिअ च वंद,
 ममवमभिणदण च सुमह च । पउमप्पहं सुपाम, निण च

चदप्पड वड ॥२॥ सुविडि च पुण्डवत, मीळल मिज्जस
 वामुपुज्ज च । निमलमणत च निण, उम्भ सति च
 उदामि ॥३॥ कुशु अर च मडि, उद सुणिमुत्तय नमि-
 निण च ॥ वदामि रिद्धिनेमि, पाम तह वदमाण च ॥४॥
 एर मण अमिबुआ, रिद्धपरयमला पदीणवरमग्गा । चउ-
 गीस पि निणवरा, विअपरा मे पमीयतु ॥५॥ शिसिय-
 वदिय-महिपा, वे ण लोगस्स उत्तमा मिद्धा । आग्गाओ
 हिलाभ, ममाहिपरमुत्तम दितु ॥६॥ चटसु निम्मलपरा,
 आग्गेसु अहिय पयामपरा । नागवरगमीग, मिद्धा मिद्धि
 मम डिमत्तु ॥७॥

इच्छामि समाममणो वदिउ जारणिज्जाण निर्माहि-
 आण मअणस जंतावि ॥ इच्छाकारेण मम्मिह भगवन् !
 राउ सुहपत्ति पटिलेद्धु ? "इच्छु"

(सुहपत्ति पटिलेद्धुवर नीचे मुत्तव द्वाद्वावर्त वंत्ता न्ये)

मुगुप्पदना धर

इच्छामि समाममणो वदिउ जारणिज्जाण निर्माहि-
 आण अणुत्ताणह मे मिउग्गाह निर्माहि, अक्षेणाय पाय-
 मफास, समणिज्जो मे शिलाभी अण्णकिल्लारा बहुमुमेण
 मे राउअरदम्तो ? अत्ता मे ? जारणिज्ज च मे ? रामेमि
 समाममणो राउय उदरम्म, आरस्सिआए पडिरमामि,
 समाममणाण, गट्ठाण आमायणाए, नित्तीमत्तयणा, ज

किंचि मिच्छाए मण्डुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए
 कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, मरकालियाए मर
 मिच्छोरयाराए सत्त धम्माइक्कमणाए आमायणाए जो मे
 अइयारो रओ तस्स एमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि
 गरिहामि अप्पाण बोसिरामि ॥ (५८)

इच्छामि एमासमणो ! वडिउ जारणिज्जाए निमीहि-
 आए । अणुनाण्ड मे पिउग्गह निसीदि, अहोकार्यं
 कायसफास एमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलताण बहु-
 सुमेण मे, राइअरइक्को ? जत्ता मे जणणिज्ज च मे एमेमि
 एमासमणो राइय वइक्कम्म पडिक्कमामि एमासमणाय,
 राइयाण आमायणाए तिचीसत्तयराए, ज किंचि मिच्छाए
 मण्डुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
 मायाए लोभाए मरकालियाए मर मिच्छोरयाराए सत्त
 धम्माइक्कमणाए आमायणाए जो मे अइयारो रओ तस्स
 एमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण
 बोसिरामि ॥

इच्छाकरेण सदिसह भगवन् राइअ आलोउ ? 'इच्छ'
 आलोणमि । जो मे राइओ अइयारो रओ, रुइओ वाइओ
 माणमियो उस्सुत्तो उम्मग्गो अरुणो अरुणिज्जो
 दुक्काओ दुग्गिचिंतियो अणायारो अणिच्छिअव्वो
 असारगपाउम्हो नाणे दमणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए ।

तिष्ठ गुणीण, चउएहे रमायाण पचएहमणुअयाण,
 तिष्ठ गुणअयाण, चउएह मिक्कयाअयाण वारमरिठस्म
 माअगधम्मम्म ज गडिअ ज गिराहिअ तस्म मिच्छामि
 दुक्कड ॥

मयस्मरि राउअ दुच्चित्तिअ दुम्भामिअ दुच्चिट्ठिअ,
 इच्छासारेण सदिमह भगवन् । “इच्छ” तस्स मिच्छामि
 दुक्कड ॥

(पन्थास आदि पन्थ हों तो ऊपर मुनय दो नफे याग्या
 देना और पदस्य न हा तो एक रमासमण देकर)

इच्छामि सुमागमणो उदिउ जारणिज्जाए निमीहिआण
 मत्थएण वदामि । “इच्छकारि सुहगड सुखउप शरीर
 निगराघ सुगमयम यात्रा निर्गहते होनी । स्वामी माना
 हूँजी मात पाणी का लाभ दनावी ।”

इच्छामि सुमागमणो ! उदिउ जारणिज्जाए निमीहि-
 आण मत्थएण वदामि ॥

रमासमण नेकर गड़ा होने और दोनों हाथ जोड़कर —

इच्छासारेण सदिमह भगवन् । अशुद्धिओमि अच्चि
 तर राउयं॥ खामेउ ? “इच्छ खामेमि राउय” जमिनि
 अपत्तिअ, परपत्तिअं मत्त पाणे निणए वेयावन्ने आलावे

कथारा बने पीढ़े जहा “राउय” धोलना लिखा है वहां
 “देवसि” धोलना !

सलावे उचासणे समामणे अतन्मासाए उपरिमासाए जरुचि
मज्झ विणप परिहीण सुट्ठम वा नायर वा तुम्हे जाणइ
अह न जाणामि तस्म मच्छामि दुक्ख ॥

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाण निमीहि
आए मत्थएण वदामि ॥ “इच्छाकारेण मदिमह भगवन्
पसापकरी पच्चक्खाण का आदश दीजियेजी ।

(जो पच्चक्खाण करना हो वो लेना ।)

एगासण तथा एकलठाणां का पच्चक्खाण,

उग्गाए सूरें नमुवारसद्विय, पोरिमि, साठपेरिसि,
मुहिसद्विय, पच्चक्खाण । उग्गाए सूरें चउद्विहपि आहार-
असण, पाण, राइम, साइम, अन्नत्यणामोणेण, सहमा-
गारेण, पच्चक्खकालेण, दिमामोहेण माहुययणेण, महत्तरा-
गारेण, सत्त्वसमाहिउत्तियागारेण । एगासण पच्चक्खाण,
अन्नत्यणामोणेण, सहमागारेण, लेवाल्लेवेण, निहत्थमसद्वेण,
उक्किरत्तविवेणेण, पच्चमन्निएण, पारिदारगियागारेण,
महत्तरागारेण, सत्त्वसमाहिउत्तियागारेण । एगासण

एकलठाने के पच्चक्खाणमें ‘आउंटणपमारणेण’ इतना
पाठ छोड़कर और सब पाठ एगासणके पच्चक्खाणका ही धोलना
चाहिये । एकलठाने में मुह और दाहिने हाथके सिवा अन्य
किसी अंगको नहीं हिलाना चाहिये और जीभ कर उसी जगह
चउद्विह्वार कर लेना चाहिये ।

पञ्चक्खाड, त्रिविहपि आहार-अमण, खाडम, साडम, अन्नत्थणामोगेण, सहमागारेण, सागारियागारेण, आउट-
णपमारणेण, गुरु अ-भुट्टाखेण, पारिट्ठागणियागारेण,
महत्तरागारेण, स-अममाहियत्तियागारेण, पाणम्म लेवेण
वा, अलेवेण वा, अच्चेण बहुलेवेण वा, समित्थेण वा,
असित्थेण वा वोमिरड ।

आयविल पचक्खाण

उग्गए घरे नप्पुवाग्गमिअ पोरिमि साडपोरिमि मुट्ठिम
हिअ पचक्खाड । उग्गए घरे चउविहपि आहार-अमण,
पाण, खाडम, माडम, अन्नत्थणामोगेण, सहमागारेण,
पच्छन्नकालेण, दिमामोहेण, माहुरयखेण, महत्तरागारेण,
स-अममाहियत्तियागारेण । आयविल पचक्खाड, अन्नत्थणा-
भोगेण, सहमागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थमसट्ठेण, उक्खित्त
रिवेगेश, पारिट्ठागणियागारेण, महत्तरागारेण, स-अममाहि-
यत्तियागारेण, णगम्मण पचक्खाड, त्रिविहपि आहार-अमण,
खाडम, साडम, अन्नत्थणामोगेण, सहमागारेण, सागारि-
यागारेण, आउटणपमारणेण, गुरु अ-भुट्टाखेण, पारिट्ठागणि-
यागारेण, महत्तरागारेण स-अममाहियत्तियागारेण, पास्तण
लेवेण वा अलेवेण वा, अच्चेण वा, बहुलेवेण वा, समित्थेण
वा, असित्थेण वा वोमिरड ।

सूरे उग्राए, अम्भत्तद्व पञ्चमसाद । निमिहं पि आहार-
असण, साटम, साडम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण,
पारिद्धाणियागारेण, महत्तरागारेण, मन्त्रसमाहियति-
गारेण । पाणहार पोरिमि, साटपोरिमि, मुट्ठिमदिय
पञ्चमसाद; अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पञ्चमकालेण,
निसामोहण, साटुक्कणेण, महत्तरागारेण, मन्त्रसमाहियति-
यागारेण पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्चेण वा,
महुलेवेण वा, समित्थेण वा, अमित्थेण वा वोसिरह ।

चउत्तिहार उपवास-पञ्चमसाण

सूरे उग्राए अम्भत्तद्व पञ्चमसाद । चउत्तिहपि आहार-
असण, पाण, साडम, साडम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसा-
गारेण, पारिद्धाणियागारेण, महत्तरागारेण मन्त्रसमाहि-
यतियागारेण वोसिरह ।

★ देव दर्शन विधि ★

पौषध लेने के पीछे श्री जिन मन्दिरजी में दर्शन करने को
जल्द जाना चाहिये । इस वास्ते आसन को दायें कंधे पर रखना,
उत्तरासन करना, चरखला दायीं बगल में और मुहपत्ति दाहिने
हाथ में रखना, काल का वक्त हो तो बमली ओढ़ना, और
उपाध्य (पौषधशाला) में से निकलते हुए तीन बार “आवत्सहि”
कहके मौन पने इरियाममिति (जीवजतु) गेयते हुए श्री जिन
मन्दिरजी में जान । वहा तीन बार “निसीद्धि” कह करके ।
मूल नायकजी के सम्मुख होकर दूर से प्रणाम करके तीन प्रद
क्षिणा देवे । पीछे रंग मण्डप में प्रवेश कर दर्शन, मुक्ति करे—

❧ दर्शन स्तुति ❧

दर्शन देव देवस्य, दर्शन पापनाशनम् ।

दर्शन स्वर्ग सोपान, दर्शन मोक्षमायनम् ॥१॥

दर्शनाद् दुरितव्रंसी, वन्दनाद् गाञ्छितप्रद ।

पूजनान् पूरु श्रीणा, चित्त साक्षात् सुरदृम ॥२॥

त्रिपद् नाथक तु धणी, मही महीगे महाराज,

महोटे पुण्ये पामियो, तुम दरिमण हूँ आन ॥३॥

आन मनोरथ सवि कल्या, प्रगत्या पुण्यरञ्जोल,

पाप कर्म दूरे टल्या, नाठा दुष्ट ददोल ॥४॥

जानावरणीय छव करी, दर्शनारणीय कर्म,

वेदनीय कर्म दूरे करी, दान्यु मोहनीय कर्म ॥५॥

इच्छामि एवाममणो वरिउ चारणिञ्चाण निमीहिआए

मत्थण्य वदामि ॥

इच्छाकरेण सदिसह भगवन् ! इरियाउदिय पडिक्-
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्मिऊ, इरियाउदियाए, निराइ-
खाए । गमखागमणे, पाणक्कमणे, नीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओमा उत्तिग-पण्णग-दग्ग मट्ठी-मक्कटामजाणा मक्कमणे, जे
मे जीया निराहिया एगिंदिया वइदिया, तेइदिया, चउरिं-
दिया, पचिदिया, अभिहया उत्तिया, लेमिया, म्मुवाडिया,
सधडिया, परिपारिया, तिलामिया, उदिया,
मक्कामिया, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

तस्य उत्तरीरस्त्रेण, पापिञ्चरगण विमोदिरग्रेण,
निमल्लीरग्रेण, पाराण इम्माण निम्पायणद्वारेण, ठामि
काउस्मग ॥

अथ त्व उममिण, नीससिण, तामिण, धीण,
जमाण, उडुण, वायनिमगेण, भमलिए पितमुच्छाण,
सुदुमेहि अगसचालेहि, सुदुमेहि रेलमचालेहि, सुदुमेहि
दिहिमचालेहि, एवमएहि आगारहि अमगो अरिराहिओ
हुज्ज मे काउस्मगो । जाय अग्निताण भगवताण, नमुका-
रण न पारेमि ताव पाय ठाणेण मोखेण भाणेण अप्पाण
योमिरामि ।

(यद्य एक लोगस का या चार नववार का काउस्मग करना
बीछे प्रगट लोगस कहना, वह नीचे लिख अनुसार)

लोगस्म उज्जोअगरे, धम्मतिथियर जिणे । अरिहत्त
कितइस्स, चउवीम पि केवली ॥१॥ उत्तममज्जिअ च वदे,
समवमभिणदण च सुमह च । पउमप्पह सुवाम, निण च
चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत्त, सीअल मिज्जस
वासुपुज्ज च । निमलमणत्त च जिण, धम्म सतिं च
वदामि ॥३॥ कुयु अर च मल्लि, वद मुण्डियुअय नमि-
जिण च ॥ वदामि रुद्धनेमि, पासं तह वदमाण च ॥४॥
एव मए अभिषुआ, रिद्धयस्यमला पहीणजरमण्णा । चउ-
वीसं पि जिणरा, तिथपरा मे पमोयतु ॥५॥ कितिय-

प्रदिय-महिषा, जे ए लोगसम उत्तमा सिद्धा । आरुगयो-
हिलास, ममाहियरमुत्तन दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलपरा,
आट्ठेसु अहिय पयामपरा । सागरवरगभीरा, मिद्धा सिद्धि
मम दियतु ॥७॥

इच्छामि रामायनसो उदित जागलिज्जाए निमोहि-
आए मत्थएण चदामि ॥

(इम प्रकार तीन गमासमख देवर—)

इच्छाकारण सदिमह भगवन् ! चैत्यवदन ररु ?

“इच्छ”

सरलरुशलरुद्धि, पुररायतमेधो ॥

दुरिततिमिरमानु, वन्ध-वृक्षोपमान ॥१॥

भगवन् निबिपोत सर्व सम्पत्ति हुतु ॥

स मयतु सतत व श्रेयसे शान्तिनाथ

—श्रेयसे पाररनाथ ॥२॥

॥ चैत्यवन्दन ॥

भगवन् देव अरिहन्त नमू, समरु तोरा नाम ।

ज्या ज्या प्रतिमा चिनत्तणी, त्या त्या करु प्रणाम ॥१॥

गरुडाय श्री आदि देव, नेम नमू गिरनाथ ।

तारगे श्री अर्जितनाथ, आरु अपम बुद्धार ॥२॥

अष्टाष्ट गिरि उपरे, चिन चोशीमी जोय ।

मणिमय भूरति मानस, भरते मराचा सोय ॥३॥

समेत शिखर तीरथ बड़ा, ज्या वीसे जिन पाय ।

(वैभारऊ गिरि उपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥

माडबगद नो राचियो, नामे देव सुधाम ।

अपम कहे चिन समरतां, पहुंचे मन की आस ॥५॥

जे रुचि नामतित्य, समे पायालि माणुसे लोण ।

जाइ जियबियाइ, ताइ सगाइ वदामि ॥१॥

नमस्तुष्य अरिहताय भगवताय ॥ १ ॥ आगराय,

वित्थयराय, सयसनुद्धाय ॥२॥ पुरिसुत्तमाय, पुरिसमीहाय,

पुरिसगरपुडरीआय, पुरिसगरगघहत्थीय ॥३॥ लोमुत्तमाय,

लोगनाहाय, लोगटियाय, लोगपईराय, लोगपज्जोअग-

राय ॥ ४ ॥ अमयदयाय, चक्रुदयाय, मागदयाय,

सरखदयाय बोद्धिदयाय ॥५॥ धम्मदयाय, धम्मदेसियाय,

धम्मनायगाय, धम्मलग्गीय, धम्मरचाउरतचवण्डीय

॥६॥ अण्णडिहपरनायठसणधराय; निअइछउमाय ॥७॥

निणाय जाययाय, तिनाय तारयाय, बुद्धाय देइयाय,

मुत्ताय मोअगाय ॥८॥ सच्चञ्चुय सच्चदरिसीय, सियमय-

लमरुअमणतमसयम गाराइमपुणरायित्ति, मिद्धिगडनाम-

घेय, ठाय सपत्ताय, नमो जिणाय, जिअमयाय ॥९॥

जे अ अइथा मिद्धा, जे अ मयिम्मतिणायण काले ।

सपडअ वट्टमाणा, सवे तिरिहेण वदामि ॥१०॥

जायेति चेद्वाङ्, उद्धेय अहे अ तिरिय लोए अ ।
सगाड ताड उदे, इह सतो तत्थ मताइ ॥१॥

इच्छामि सुमाममणो वदिउ जायसिज्जाए निमीहि-
अए मत्थएण उदामि ॥

जायत करि माह, मरहेरणय महाविठेहे अ । सधेमि
तेमि पणयो, विविहण तिदड निरियाए ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यापाध्यायमरसाधुभ्य ॥ -

श्री ऋषभदेवजी का स्तवन ।

जग जीवन जग बहाला हो, मारु देवानों नडलाल रे ।
सुग दीठे सुख उपने, दर्शन अति ही आखद लालरे ॥१॥
आखडी अजुअ पाएडी, अष्टमी रामी सममल लालरे ।
वदन ते शारद चदलो, गायी अतिगसाल लालरे ॥२॥
लक्षण अगे विराजता, अडहीय सइस उदार लालरे ।
रेखा कर चरणा दिके, अमितर नहीं पार लालरे ॥३॥
इंद्र चन्द्र रनि गिरितणा, गुण लइ धर्मायु अग लालरे ।
माग्य निया वसी आचीयु, अचिरज एह उत्तम लालरे ॥४॥
गुण सघला अगे कर्मा, दूर र्पा समी दोष लालरे ।
वावरु जग विजये सुणयो, दजो सुखनो पोए लालरे ॥५॥

उपसगहर पाम, पाम उदामि रम्मघणमुख । निसहर
निसनिवास, मगलरघ्नाय-आगाम ॥१॥ निमहर पुलिगमत,

कठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्म गहरोगमारी, दुइतरा
जति उग्याम ॥२॥ चिड्डुठ दूरे मतो, तुज्झ पणामो नि
बहुफलो होइ । नरतिरिएमु नि जीरा, पायति न दुकरदोगध
॥३॥ तुह सम्पत्ते लद्धे, चित्तामणिकप्पपायन्महिण ।
पायति अग्निग्घेण, जीरा अयरामर ठाण ॥४॥ इय स'दुमो
महायस, मत्तिभरनिभरेण द्वियएण । ता देव द्विज्जरोहिं,
भवे भवे पामत्तिणचद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय धीअराय कहना)

जय धीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभायओ
मयव ! मयनिवेओ मग्गाणुसाग्गिया इड्डफलमिद्धि ॥१॥
लोगनिरुद्धयाओ, गुम्जणपूया परत्थकरण च । सुहगुम्जोगो
तत्थयणसेरणा आभनमएडा ॥२॥ धारिज्जइ जइ नि
नियाण वधण वीयगय तुह समए । तइ वि मम हुज्ज
सेरा, भवे भवे तुम्ह चलणाण ॥३॥ दुक्कएओ कम्मएओ,
समाहिमरण च बोहिलाओ अ । सपज्जउ महणथ, तुहनाह
पणाम करणेण ॥४॥ मर्रमगलमारण्य, मर्रकल्याणकारणम् ।
प्रधान मर्रधर्माणा जैन जयति शासनम् ॥५॥

अरिहतचेइआण, करेभि काउस्मगा, वदणवत्तिआए,
पूथणवत्तिआए, सवारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, रोहि
लाम वत्तिआए, निरुममगवत्तिआए, मिद्धाए, मेह्हाए,
धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
काउस्ताम ॥

अन्नस्य उमसिएण, नीमसिएण, एासिएण, छीएण,
जभाडएण, उड्डुएण, वायनिमग्गेण, ममलीए पित्तमुञ्जाए,
सुट्टुमेहि अगसचालेहि, सुट्टुमेहि खेलमचालेहि, सुट्टुमेहि
दिट्ठिसचालेहि, एवमाडएहि आगारेहि अमग्गे अरिराहियो,
हुज्ज मे काउस्सग्गे । जार अरिहताण भगवताण नमु-
कारेण न पारेमि तार काय ठाणेण मोणेण भाणेण
अप्पाण घोसिरामि ।

(यह एक नयकार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो
पाभ्याय सर्वमाधुभ्य ” कह कर थुड कहना) —

आदि जिनर राया जाम सोरन काया,
मरुदरी माया, घोरी लउन पाया ।
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल मिरिराया मोक्ष नगरी मिधाया ॥१॥

फिर प्रभु के सम्मुख पक्षकपाण करना, पीढ़े जिन मन्दिर
जी से निकलते हुये तीन दफे “आवस्सहि” कहना और उपाश्रय
में तीन दफे “निसीहि” कह कर प्रवेश करना और १०० पाचडे
भूमि से आगे गयाह लो इरियावहि करने —

इच्छामि समासमणो वदिउ जाण्णिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वदामि ?

इच्छामि सदिमह भगवन् ! पडिक्-
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्मिऊ, गिराह-

गए , गमरागमणे, पाणवमणे, वीपवमणे, हरियवमणे,
मोसा उरिंग-पणग दग मट्टी मवडासताणा सकमणे, जे
जे जीरा गिराहिया एगिंदिया रेडदिया, तेडदिया, चउरि-
देया, पचिंदिया, अमिहया वत्तिया, लेसिया, सघाड्या,
सघट्टिया, परियागिया, किलामिया, उहरिया, ठालाओठाण
सकामिया, जीवियाओ वरगेविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीरुखेण, पापच्छिनरुखेण निमोहिरुखेण,
निसल्लीरुखेण, पायाण रम्माण निग्वापणद्धाण, ठामि
काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ उमसिएण, नीससिएण, रासिएण, छीएण,
जमाइएण, उट्टुएण, वापनिमग्गेण, भमलिण पित्तमुच्छाए,
सुट्टुमेहिं अगसचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसचालेहिं, सुट्टुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एरमाइणहिं आगारेहिं अमग्गो अगिराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गा । जाय अरिहताण भगरताण, नमुक्का-
रेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोखेण भाखेण अप्पाण
वोसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स फटना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जेयगर, धम्मनित्थियर निखे । अरिहते
नित्तइस्म, चउरीस पि केरली ॥१॥ उसभमनिय च वद,
मभरमभिणदण च सुमद च । पउमप्पह सुपाम, जिण च

चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फटत्त, मीयल सिज्जम
मापुपुज्ज च । विमलमण्ण च जिण, धम्म सत्तिं च
वदामि ॥३॥ कुट्टु थर च मल्लि, वद सुणिसुत्तय नमि-
निण च ॥ वदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥
एण मए अभिजुया, निट्ठयग्यमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीस पि जिणवरा, नित्ययरा मे पमीयतु ॥५॥ किन्तिय-
वदिय महिपा, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्गानो
हिलाभ, समाहिणरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलयर,
आइधेसु अट्टिय पयासयरा । मागररगभीरा, मिट्ठा सिद्धिं
मम दिवतु ॥७॥

इच्छामि सुमाममणो वदितुं जायसिज्जाणं निमीहि-
आए मत्थण्णं वदामि ॥ इ-ज्जाणं सदिमहं भगवन् !
गमणं गमणे ॥ आलोठं ? “इच्छ”

इरिया समिति, भाषा समिति, कृषि समिति, आदान
भंड मत्त निरीक्षण समिति, पारि ठापनिका समिति, मन
गुप्ति, वचन गुप्ति, क्लाय गुप्ति, ये पाच समिति, तीन
गुप्ति, आठ प्रवचन माता आचरणे धर्म, सामायिक
पोसह लीधे, अच्छी रीति से पाली नई, खडन निराधना

पोषक होने के बाद अगर राइ प्रति क्रमशः करे तो उही सात लाख, अठार पापस्थान की दण्डोयणा आने कहना, उदले इना।

हुई होय, ते सगिहू मन उचन काया ए कृती मिच्छामि
दुखन्द ॥

(इसने परचात दोपहर में देवर्षदत्त करना चाहिए जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस में सम्प्रत्य १ बोल । देवर्षदत्त अफाल में (११॥ यजे से २० यजे तक) न करें । यदि वर्षा ऋतु (आषाढ सुदी १४ से कार्तिक सुदी १४ तक) में दोपहर के देवर्षदत्त से पहिले भूमि प्रमार्चन करना आवश्यक है, इन दिनों में तीन बार पहिले भूमि प्रमार्चन करना चाहिए । उसकी विधि इसी पुस्तक के प्रष्ठ १७ की २८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर प्रष्ठ १ की १३ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार कर ।

पञ्चमखाण पारने की विधि

पञ्चासण, एकलठाणा, आयबील, आदि त्रिगिहार उपवास के प्रत का पञ्चमखाण पारना होतो निम्न प्रकार से किया करें । परन्तु न याहुन का देवर्षदत्त करके पञ्चमखाण पारे ।

इच्छामि खमासमणो यदिउ जायणिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण वदामि ॥

इच्छाकारेण सदिसह मगगन् ! इरियाग्रहिय पडिक्-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्मिऊ, इरियाग्रहियाए, निराह-
णाए , गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीथक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओसा उन्निम-पण्ण-दग-मडी मक्कडाम्पज्जणा सकमणे, जे
मे जीना निराहिया एन्निदिया वेददिया, वेददिया, चउरि-

दिया, परित्रिया, अमिदया उन्निया, लेसिया, मथाइया,
मधट्टिया पगियागिया, मिलागिया, उदगिया, ठाणाथोठाण
मरागिया, जीगियायो वरगेगिया तम्म मिच्छामि दुषड ।

तम्म उत्तरीसण्णेण, पायच्छित्तसरण्णेण विमोहिसरण्णेण,
विमल्लीसण्णेण, पायास कम्माण निग्घायणट्ठाण, टामि
काउस्समग ॥

अन्नस्य उममिएण, नीममिएण, एममिएण, छीएण,
जमप्पण, उट्टुएण, पायनिसण्णेण, ममलिण पित्तमुच्छाण,
सुट्टुमेहिं अगमत्तालेहिं, सुट्टुमहिं खेलमचालेहिं, सुट्टुमेहिं
दिट्ठिम गालेहिं, एरमाट्ठएहिं आगारहिं अमग्गो अरिराहियो
हुज्ज मे काउस्समगो । ताव अरिहताण भगवताण, नमुक्का
रेण न पारेमि ताव काय टाखेण मोखेण भाखेण अप्पाण
नेमिगमि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नरकार का काउस्समग करना
बीछे, प्रगट लोगस्स कहता, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मवित्थिपर जिणे । अरिइत्त
कित्तस्स, चउरीम पि केउली ॥१॥ उमममनिय च वद,
ममरममिखदण च सुमड च । पउमप्पइ सुपाम, निण च
चदप्पई वद ॥२॥ सुगिहिं च पुण्णत्त, सीअल मिज्जम
वासुपुज्ज च । विमलमखत्त च निण, धम्म सति च
उदामि ॥३॥ कुबु अर च मल्लि, वद सुणिसुअय नमि

नेण च ॥ वदामि सिद्धिनेमिं, पास तद्द वद्धमाण च ॥४॥
 एव मए अभिबुद्धा, विदुयस्समला पदीणजरमरण । चउ-
 वीस पि जिणपरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिप-
 वदिय-महिया, जे ण श्लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो
 हिलाभ, ममाद्विवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदसु निम्मलपरा,
 आइधेसु अहिय पयासपरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि
 मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि एवामपणो वदिउ जायसिज्जाए निमीदि-
 आए मत्थएण उदामि ॥

(एवमासमण नेयर—)

इच्छाकारण सदिमह भगवन् ! चैत्यरदन यत्नं ?

“इच्छ”

जगचिन्तामणि चैत्यरदन

जगचिन्तामणि जगनाठ, जगगुरु जगरक्खण, जगरधर
 जगमत्थगह, जगभागरिअउण, अहाणयसठविपरूय,
 कम्मठुविणसण, चउरीसवि निणरर जयन्तु, अप्पडिहय-
 सामाण ॥१॥ कम्मभूमिदिं कम्मभूमिहि पढममवपाणि,
 उअओसय मनरियय, निणपराण विहरत लभइ । नर-
 कोडिदिं केवलीण, कोडीमहस्म नर साहु गम्मइ । सपइ
 विणरर वीस मुणि, विदुओडिहिं वरणाण, समणइ कोडी-
 महम दुअ, धुणिनिय निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय

जयउ सामिय गिम्ह सनु त्रि, टब्बिउ च्च न्नेत्तैस्स,
 लयउ वीर मच्चउरिमहण, मच्चमल्लहि म्मुत्तिह्मन्त, कुम्भ,
 पाम दुहदरियसुहण, अरगविदेहि त्रिदण, त्थिउ त्थिउ
 त्रिदिमि नि क वि तीमाणागयसुपय्य ३४ त्थि त्थि
 ॥३॥ सत्ताणउइ सहस्सा, लक्खा छण्ड म्मुह सत्तु
 मत्तिमय सामिमा, तिमिलोण पोर ईउ ह्मन्त लोण
 फोडिमपाहं, कोडि बापाल लस्स च्चउह्मन्त ६४ त्थि म्मुह
 अमिइ (असिआउ), सागयगिआउ फल्लन्ति ३५

अ किंयि नामत्तिय, मग्गे म्मुह म्मुह म्मुह ३६
 जाहं निणगिआउ, उह सग्गा ३७ त्थि ३८

नमूत्तुम्भ अगिहंवाण भग्गदम्भ ३९

धेय, ठाण मपत्ताण, नमो निणाण, निअमपाण ॥८॥
 जे अ अइया मिद्धा, जे अ भविस्मतिणाण काले ।
 सपइअ वइमाणा, मवे तिरिहण वटामि ॥९॥

जारति चेइआइ, उइडेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
 सताइ ताइ उडे, इह मतो तत्य सताइ ॥१॥

इच्छामि सुमाममणो वटिउ जारणिज्जाण निमाहि
 आए मत्तण्ण वटामि ॥

जारत करि साह, भरहणय महारिडेह अ । मत्तमि
 तैमि पणयो, तिरिहेण तिडड रिग्याए ॥२॥

नमोऽर्हत्तिगद्धाचापापाध्यायसरसाधुभ्य ॥

उत्तसगहर पाम, पाम वटामि कम्मचणमुव । विसहर-
 विसनिभाम, मगलउद्वाण आगस ॥१॥ विसहर कुलिंगमत,
 कठ धारेइ जो सवा मणुओ । तस्म गहरोममारी, दुद्धनरा
 जति उत्तसाम ॥२॥ चिहुउ दूर मतो, तुज्ज पणानो रि
 पहुफलो होइ । नरतिरिण्णु रि जीरा, पारति न दुक्खदोगध
 ॥३॥ तुह सम्मत्ते लडे, चिंतामणिरुप्पपायन-महिए ।
 पारति अविग्गेण, जीरा अयरामर टाण ॥४॥ इय सज्जो
 महायम, मत्तिअमरनि-मरण हियण्ण । ता दर दिज्जमोदि,
 मवे भव पामनिण्णचट ॥५॥

(अत्र दोनों हाथ जोड़कर जय श्रीगुरुाय कहना)

जय श्रीगुरु ! जगगुरु !, होउ मम तुह पमारओ

भयम् । भयनिरेयो मग्गालुसाग्गिआ इट्ठफलमिद्धि ॥१॥
 लोगगिन्दुआओ, गुन्नणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुनोगो
 तत्थयणसेयणा आमरमसुडा ॥२॥ वारिज्जः जः पि
 निआणं उधणं वीयगयं तुहं समए । तहं पि मम हुज्ज
 सेरा, मवे मवे तुम्हं चलणाण ॥३॥ दुक्खरुओ यम्मसुओ,
 समाहिमग्गं च बोहिलामो अ । मपज्जउ महएअ, तुहनाइ
 पणामं उरएण ॥४॥ मर्यमगलमागन्थ, सर्यरन्थाणकारणम् ।
 प्रधानं मर्यधर्माणा जैनं जपति शामनम् ॥५॥

इन्टामि सुमासमणो वदिउ जागणिज्जाए निमीहिआए
 मत्थएण उदामि ? इन्हाकरेण मग्गिह भगवन् ! मज्झाय
 वरुं ११ ' इन्डु' "

(एक नरकार नीचे मुचन गिनना)

नमो अग्निहताण । नमो मिद्धाण । नमो आयरियाण ।
 नमो उरज्झायाण । नमो लोए मग्गमाण । एमो पचं नमु
 वारो । मग्गपाउप्पणामणो । मगलाणं च सत्थेमि पढम
 इउउ मगल ॥१॥

फिर मज्जह निखाण सज्जाय निम्न प्रकार से कहना—

अथ मज्जह निखाण सज्जाय ।

मज्जह जिणाणमाण, मिच्छं परिहरहं धरहं सम्मत्तं ।
 छरिहं आवस्मयम्मि, उज्जुत्तो हों पत्थिम ॥ १ ॥
 पवेमु पोमहय, दाणं सीलं तमो यं भवो अ ।

सज्जाय नमुकारो, पगेयारो अ जयणा. अ ॥ २ ॥
 जिणपूया जिणपुण्ण, मुहुधुय सादम्मियाण वच्छल्ल ।
 ययहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
 उवसम विवेग सवर, मासासभिई छजीर करुणा य ।
 धम्मिअजणससग्गो फरुणदमो चरुणपरिणामो ॥ ४ ॥
 सघोररि रहुमाणो, पुत्थयस्सिद्धस पमायणा निच ।
 सद्दाण किच्चमेष, निच सुगुरुएमेण ॥ ५ ॥ इति ॥

इच्छामि एमासमणो वदिउ जायणिज्जाए निमीहिआए
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! पच्चक्खाण
 सुद्धपत्ति पडिलेहुँ ?

(जेसा कहकर सुद्धपत्ति पडिलेहना—पीछे एमासमण नेन—)

इच्छामि एमासमणो वदिउ जायणिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिमह भगवन् !
 पच्चक्खाण पारु ? 'यथाशक्कि'

इच्छामि एमासमणो वदिउ जायणिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिमह भगवन् !
 पच्चक्खाण पारा "तडत्ति"

(जेमे कहकर दाहिने हाथको चरवल पर रखकर मस्तक
 मुकावर एक नजर मय गिनकर जो पच्चक्खाण किया हो उस
 नाम से कह इस भाषिक पारना—)

उगए सर नमुकारमहिं पोरिं माहपोरिं

पुरिमड्ड गटिमहिय मुट्टिमहिय पच्चसत्ताण किया चउ-
निह याहार, आयनिल निनि एकासना किया तिरिह
आहार, पच्चसत्ताण फामिय पालिअ सोहिय तीरिय किट्टिय
आराहिय ज च न आराहिय तम्म मिच्छामि दुक्कड ।

(एक नयकार गिनना अगर बिबिहार उपवास हो तो उसे
नीचे माफिक बोलना—)

सूरे उगए उपराम किया तिरिहयाहार पोरिमि
साठपोरिमि पुरिमड्ड मुट्टिमहिय पच्चसत्ताण किया, फामिय
पालिअ सोहिय तीरिय किट्टिय आराहिय ज च न
आराहिय तम्म मिच्छामि दुक्कड ।

एक नयकार गिनना चउ-बिहार उपवास चाले को पच्चसत्ताण
पारने की जरूरत नहीं होती ।

पोषण म एगामण करने की विधि ।

पच्चसत्ताण पारने के बाद पानी पीना हो तो मांगा हुआ
अचित्त जल बैठने पर बैठकर पीना और निस धरतन से पानी
पिया हो उसको पूछकर रखना । पानी के धरतन को उखाड़ा
नहीं रखना । आयनिल, नीधी, या एकासणा करने अपने घर
जाना हो तो इरियासमिति सोधते (यानी रास्त में जीयजंतु
देखते हुये) जाना और घर म प्रवेश करते 'जयणा मंगल' शब्द
घोलना और बैठना (आसन) निद्धा बैठकर, स्थापना स्थापन
कर "इरियायहि पडिक्कम" कर गमाममण देकर "गमणा गमणे"
आलोयनी, और काना लहर पाटिया, थाली बगैरा धरतन व

मृ १ पद कर (प्रसार्जन कर) हो सके जब तक सुनि महाराज को चोहरा कर निश्चल (स्थिर) आमन से मौन रख आहार करना, अंठा नहीं डालना और याली धोकर पीना, बगैर कारण स्थादिष्ट आहार और लविगादि ताबुल (मुग्गवास) न लाना और मुग्ग शुद्ध कर दिवस चरिम विविहार का पथरूपाण करना और जिसको घर न जाना हो, वह पहले पुत्र नौकरादि को कहा हो उसका लाया हुआ आहार उपर लिखि विधि से पौषघशाता में ही करे और फिर बाद पौषघशाता में आकर "इरियासहि पडिक्म" कर (सो पायड ह्रा तो गमणागमणे आलोय कर) पुन जगधितामणि का चैत्यवदन जयबीयराय तक करना ।

पौष व म पेशान (मात्रा या स्यडिल) जाने की विधि ।

पेशान व पाराने जान के वक्त पहनने का धोती पहनना, कामली का फाल हो तो सिर व कान पर कामली ओलनी, मुहपत्ति कदोरे में रखनी, चरबला डारा बगन में रखना, रात का वक्त हो तो नडासन में इरियासमिति सोधते चलना । पेशान करना हो तो कू डी पूजनर उसमें पेशाव कर परठघन (पेशान जमीन पर डालन) की जगह कू डी रखनी, निर्वाच नगह देग "अणुजाणह जसुगो" कह कर पेशान जमीन पर डालना, फिर कू डी नीचे रख तीन दफे "बोसिरे" कहना और कू डी अधिक जल से धोकर उसके स्थान पर रख फिर अपने हाथ धोना ।

पाराने जाना हो तो निर्वाच नगह देग "अणुजाणह

जस्मुगो" कहकर पायाने जाना और शुद्धि करके तीन क्षण 'बोसिरे' कहना और वापिस आकर हाथ पग धोना और पायाने की शता दिनही को निवारण कर लेनी चाहिये क्योंकि रात्रि को पायाने जाने में जीर जनु की जतना न रहने से बहुत दोष लागता है और जाना ही पड़े तो १०० हाथ जगह के अक्षर जाना, धोती बदलने बाद दरियावहि पहिच्यना ।

मिर्क रात्रि के चार पहर का पौषध लेने की विधि ।

रात्रि के चार पहर का पौषध लेने वाला जो पहिलेहण और न्येयदन की क्रिया दिन म ही करने की है जिसमे पौषध जल्मी शुद्ध करना चाहिये । उसकी विधि इसी पुस्तक के प्रष्ट ६ वें मे आरम्भ होकर प्रष्ट १५ की ३ पक्ति तक (बटुवेल करेमि ? "इच्छ" तक) लिया है उसके अनुसार कर के बाद में शाम के पहिलेहण में इच्छामि० समासमण देकर "पहिलेहण कर ? इच्छ" से शुद्ध कर । उसकी विधि इसी पुस्तक म आगे "पिछले पहर को पहिलेहण करने की विधि" म है, उसके अनुसार करें ।

सुबह चार पहर का पौषध लिया हो और पीछे—

आठ पहर का पौषध लेने की विधि ।

पिछले पहर को पहिलेहण करने की विधि में "गमणा-गमणे" आलोचकर, फिर इसी पुस्तक के प्रष्ट १० की ७ वी पक्ति से आरम्भ होकर प्रष्ट १५ की ३ पक्ति तक (बटुवेल करेमि ? "इच्छ" तक) दिया है उसके अनुसार करे परन्तु—“सज्जाय

करू" की जगह "समाय म हूँ" कहना और तीन नयन की जगह (नववार गिनना । फिर ध्यान में शम के पहिलेहण ॥ "इच्छामि० समासमण देकर "पडिलेहण करू ? "इच्छ" के शुरू करे । उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे "पिउले पहर के पहिलेहण करने की विधि में ॥ उसकी अनुसार करे ।

पिउले पहर में पडिलेहण करने की विधि ।

(मुनिराज न स्थापनाचार्य की पडिलेहण की हो उसने सामने छ' घड़ी दिन रहे उस समय पडिलेहण करना स्थापना-चार्य की पडिलेहण त्रिय पहिले पडिलेहण नहीं होती ।

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाण निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ उठाकारण सदिमह भगवन् !
उहुपडिपुएणा पोसिती ? "इच्छ"

(पुन समासमण देकर इसी पुस्तक के पृष्ठ ३७ के १८ वाँ पंक्ति से प्रारम्भ करने पृष्ठ २० की पंक्ति तक ("गमणाममणे" आलोचन कर) दिया है उसकी अनुसार किया करें । पीछ —

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाण निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ उठाकारण सदिमह भगवन् !
पडिलेहण करू ? "इच्छ"

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाण निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ उठाकारण सदिमह भगवन् !
पोपधशाला प्रभाजू ? "इच्छ"

(वह उपवास बाल की मुहपत्ति, चरपला, आसन, पडिलेहना और पकासणादि करने बाल को बंदोरा (सूत की नागड़ी) व धोती समेत पांच उपकरण पडिलेहन करके स्वमा समण देकर इरियाग्रहि पडिबस करके)

इच्छामि स्वमासमणो वण्डि जाणणिज्जाण निमीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकरेण सदिमह भगवन् । पमाय ररी पडिलेहणा पडिलेहागोडी ? “इच्छ”

एसा कहकर मध्यम श्रतधारी किसी बड़े के उत्तरासन की पडिलेहना कर । पीछे

इच्छामि स्वमासमणो वण्डि जाणणिज्जाण निमीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकरेण सदिमह भगवन् । उपधि मुहपत्ति पडिलेह ? “इच्छ”

जैसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे

इच्छामि स्वमासमणो वण्डि जाणणिज्जाण निमीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकरेण सदिमह भगवन् । सज्झाय वरुं ? “इच्छ”

एक नयकार पढ़कर “मगह निशाणु” की सम्मय उरुद बैठ (सड़ घुटन बैठ) कर कहना ।

नमो अग्निहोत्राय । नमो मित्राय । नमो आयरियाण ।

नमो उरज्ज्मायाय । नमो लोण मणसाह्वय । एसो पच नमु-
 धारो । सच्चपायप्पणासणो । मगलाय च मन्वेमि पडम
 हवइ मगल ॥१॥

अथ मगह जिणाय सज्जाय ।

मगह जिणायमाण, मिच्छ परिहरइ धरइ मम्मत्त ।
 छन्निह आरस्मयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवत्त ॥ १ ॥
 पयेसु पोसहय, दाण सील तरो अ भावो अ ।
 सज्जाय नमुकारो, परोपयागे अ जयणा अ ॥ २ ॥
 जिणपूया जिणधुणाय, गुरुधुय सादम्मिमाण वच्छेत्त ।
 वगहारस्म य सुद्धी, रहजत्ता तित्थत्ता य ॥ ३ ॥
 उवसम विवेग सवर, मामाममिई छजीव करुणा य ।
 धम्मियज्जणससम्मो, फणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
 मघोपरि उट्ठमाणो, पुत्थपलिहण पमाणाय तित्थे ।
 सट्ठाय ऋधमेग, निव गुगुग्गएसेण ॥ ५ ॥ इति ॥

(फिर भोजन किया हो तो द्वादशावर्च वचना देवे, इस
 पुस्तक के पृष्ठ २४ की १५ वीं पक्ति में आरम्भ होकर पृष्ठ २५
 की १६ पक्ति तक लिया है उसके अनुसार कर । और विविहान
 उपवास वाला सिर्फ समासमण दे)

इच्छामि गमाममणो उदिउ जायसिज्जाण निसीहि-
 आण मत्थण्ण वटामि ? इन्द्राकारण सदिसइ मगंण् ।
 पमायकरी पच्चसुआय का आदेश दीनियेती ।

ऐसा कहकर पाण्डुरा का पञ्चस्नान कर । ११

पाण्डुरा-पञ्चस्नान

पाण्डुरा दिवसपरिम पञ्चस्नाह । अन्नयणामोगेण,
सहभागाणेण, अदत्तसंगाणेण, सन्त्यग्माहिमत्तिपागाणेण
चोत्तिह ।

इच्छामि सुमासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थण्ण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
उपधि सदिसाहुँ ? “इच्छ” । इच्छामि सुमासमणो वदिउ
जाणणिज्जाए निमीहिआए मत्थण्ण वदामि ॥ इच्छाकारेण
सदिसह भगवन् ! उपधि पटिलेहुँ ? “इच्छ”

कहकर प्रथम पहिलहन से बाही रहे हुए उत्तरासन (दुपट्ट)
मात्रा (पेशाव) करने जाने का वस्त्र और रात्रि-पौषव करना हो
तो स्थायिया, बग्नत बगौरह बग्न पहिलहे । पीछे ब्रह्मसण
लेकर पहिलेएण करने फिर गमासमाण देकर इरियानहि पहिकम
करक बुहा कथरा निकल उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ
१७ की १८ वी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १० वी

छिन्नगन्धिहार-उपवास किया हो तो इस वक्त पञ्चस्नान
करने की जरूरत नहीं है, परन्तु सुबह तिथिहार का पञ्चस्नान
किया हो और पानी न पिया हो तो इस वक्त चण्डिहार-उपवास
का पञ्चस्नान करे । उसका पञ्चस्नान इस पुस्तक के पृष्ठ ३०
में दिया है ।

पक्ति तब दिया है उसके अनुसार करें । पीछे देवर्षिन
करना, जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस समय भी
सज्जमान न होने । निसने आठ पहर का पोसाह दिया हो या
जिसने केवल रात्रि-पौषध किया हो वह देवर्षिन करके पीछे
कुण्डल (पान में डालने के लिये रुई), हंडासन और रात्रि की
शुचि के लिए घूना डाला हुआ अथवा पानी याचना करके
लेवे । पीछे—

इच्छामि रामामरणो यदिउ जागृज्जाण निर्मोहि-
आण मत्पण्णं वदामि ॥

इच्छामिरेण भदिमह भगवन् । इन्द्रियमहिय पटिष-
मामि । इन्द्र इच्छामि पटिषमिऊ, हरियारदियाण, विगह-
णाए, गमणाभमणे, पाण्डमणे, वीरकमणे, हरियकमणे,
ओमा उरिग-वणम दग-मट्टी मज्झिमताणा सरमणे, जे
म जीमा निराहिया एगिदिया वददिया, तेददिया, चउरि-
दिया, पचिडिया, अभिदया वत्तिया, लेनिया, सपाइया,
मघट्टिया, परियागिया, मिलागिया, उरविया, टाणाओठाणं
समागिया, जीगियाओ ववगेगिया तस्स मिच्छामि दुवट ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पापच्छिन्नकरणेण निर्मोहिस्करणेण,
निमल्लीकरणेण, पापाण वम्माण निचापणट्ठाण, टामि
राउम्माग ॥

अचत्थ ऊससिएण, नीमसिएण, एामिण्णं, धीएण,
जमाइएण, उहुएण, वायनिमगेण, ममालिण पित्तमुच्छ्राए,

मुहुमेहिं अगम गलेहिं, मुहुमेहिं खेलमचालेहिं, मुहुमेहिं
दिट्टिसचालेहिं, एगमादएहिं आगारेहिं अमग्गो अपिराहियो
एज्ज मे काउस्मग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुवा-
रण न पारमि ताव माय टाण्णेष मोणेष भाण्णेष अप्पाण
वोमिरामि ।

(यहां एक लोगस्म का या चार नरवार का काग्ससग करना
पीछे प्रगट लोगस्म कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जोयगर, धम्मवित्थपरे निणे । अग्गिते
जित्तम्म, चउत्तीम पि केउली ॥१॥ उमममज्जिअ च उद,
समवमभिखुदण च सुमड च । पउमप्पह सुपास, निण च
चउप्पह वड ॥२॥ मुग्गिहि च पुप्फदत्त, सीअल मिज्जम
वासुपुज्ज च । निमलमणन च जिण, धम्म संति च
वदामि ॥३॥ दउ अर च मल्लि, वड मुणिसुव्वय नमि-
निण च ॥ वदामि रिट्ठनेमि, पाग वड उड्ढनाण च ॥४॥
एउ मण अमिबुआ, निट्ठयरमला पदीणजरमग्गा । चउ
वीस पि निणउरा, विअयरा मे पमीयतु ॥५॥ इत्थिय-
वण्णिय-महिया, जे ण लोगस्म उत्तमा मिद्धा । आरग्गमे
हिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चउसु निम्मलयर,
आडग्गेमु अहिय पयासयर । नागरवरगमीरा, मिद्धा सिद्धि
मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि गमामनसो रटिडं जायमिज्जाए निर्मीहि-
आए मत्थण्ण रंटापि ॥ इच्छाकारेण सदिमह मगवन !
थदिसि पडिस्सेने १ "इच्छा"

गमा कहकर नीचे लिखे अनुमात्थानीस मडल करे ।

ये मडल रानि म बड़ी नाति सधुनीति । पारामा, पेराथ)
परीय परठवने लायक जगत्प्रेयस (प्रति सेव्य करने) के लिये हैं,

१ आघाडे आसने उचार पासरणे अण्हियासे ।

२ आघाडे आमने पासरणे अण्हियासे ।

३ आघाड मज्जे उचार पासरणे अण्हियासे ।

४ आघाड मज्जे पासरणे अण्हियासे ।

५ आघाडे दूरे उचार पासरणे अण्हियासे ।

६ आघाडे दूरे पासरणे अण्हियासे ।

सधार के पास की जगह इस साफिज छ मडल करना —

१ आघाडे आमने उचार पासरणे अण्हियासे ।

२ आघाड आमने पासरणे अण्हियासे ।

३ आघाडे मज्जे उचार पासरणे अण्हियासे ।

४ आघाड मज्जे पासरणे अण्हियासे ।

५ आघाड दूर उचार पासरणे अण्हियासे ।

६ आघाडे दूरे पासरणे अण्हियासे ।

उपासक के सारन के अंदर की तरफ इस साफिज छ मडल करना —

१ अण्णाघाडे आमने उचार पासरणे अण्हियासे ।

२ अण्णाघाड आमने पासरणे अण्हियासे ।

- ३ अणाघाडे मज्जे उचारे पामरखे अखहिआसे ।
- ४ अणाघाडे मज्जे पासरखे अखहिआसे ।
- ५ अणाघाडे दूर उचारे पासरखे अखहिआसे ।
- ६ अणाघाडे दूर पामरखे अखहिआसे ।

उपाधय के बारने के बादर नन्दीक रहकर छ मडल करना —

- १ अणाघाडे आसन्ने उचारे पासरखे अहिआसे ।
- २ अणाघाडे आसन्ने पामरखे अहिआसे ।
- ३ अणाघाडे मज्जे उचारे पासरखे अहिआसे ।
- ४ अणाघाडे मज्जे पामरखे अहिआसे ।
- ५ अणाघाडे दूरे उचारे पामरखे अहिआसे ।
- ६ अणाघाडे दूरे पामरखे अहिआसे ।

उपाधय से सौ हाथ के अदान दूर रहकर छ मडल करना —

इन मंडलों वाली जगह पहले से ही देव रखनी और मडल स्थापनाजी के पास रहकर बोलते वक्त उन उन जगह पर टट्टी का उपयोग (ध्यान) रखना ।

२४ मडल करने के बाद श्रियावहि पढिक्रम पर चैत्यचन्दन के साथ देवसी या पाचिकादि (पञ्चा वगैर) प्रतिक्रमण करे ।

सयारा पोरिसी पढ़ाने की विधि

यदि रात्रि-पौषह हो तो पढिक्रमण करने के बाद सयारा पोरिसी के समय तक स्वाध्याय, ध्यान, धर्म-चर्चा वगैरह करे । पीछे

इच्छामि एवमममलो बंदिउ जायणिज्जाए निगीदि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् !
बहुपडिपुण्णा पोसिमी ? तइत्ति;

इच्छामि एवमममलो बंदिउ जायणिज्जाए निसीदि-
आए मत्थएण उदामि ॥

इच्छाकारेण मदिसह भगवन् ! इरियागदियं पडिक्क-
मामि ! इच्छ इच्छामि पहिक्कमिऊ, इरियागदिपाए, गिराह-
णाए, समणागमणे, पाणपमणे, वीपकमणे, हरियवमणे,
थोसा उतिम-पण्णा-दग-मट्टी-मवट्टामताणा मरुमणे, जे
मे जीवा गिराहिया एगिदिया बइदिया, तेइदिया, धउरि-
दिया, पचिदिया, अभिहया उत्तिया, लेमिया, सपाइया,
सघट्टिया, परियागिया, गिलामिया, उदविया, ठाणाथोटाए
सकामिया, जीगियाओ वगगेगिया तस्म मिच्छामि दुद्धं ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायाच्छित्तकरणेण निसोद्विक्करणेण,
निसल्लीक्करणेण, पायाए कम्माण निग्धापणद्धाए, ठामि
काउस्मग्ग ॥

अन्नत्थ उग्गमिएण, नीमसिएण, रासिएण, छीएण,
जमाइएण, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमनिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, प्वमदएहिं आगारहिं अममो अगिराहिओ
हुज्ज मे काउस्मग्गो । जाय अरिदताए भगवताए, नमुक्का-

रेण न पारेमि तां राय ठाणेण मोणेण, भाणेण अप्पाण
योमिगामि ।

(यहा एन लोगस्स का या चार नवकार का काउम्सग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतिथ्यपरे जिणे । अरिहंते
रित्तस्स, चउरीम पि केवली ॥१॥ उमममज्झि च वद,
सभरमभिणदण, च सुमद च । पउमप्यद सुणाम, जिण च
वदप्पह वद ॥२॥ सुणिहि च पुप्फन्त, मीमल-सिज्जस
वासुपुज्ज च । मिमलमण्णत च जिण, धम्म सत्ति च
वदामि ॥३॥ कुपु अर च मत्ति, वद सुणिसुत्तय नमि-
जिण च ॥ वदामि रिद्धनेमि, पास तद वदमाण च ॥४॥
एव मए अमिपुआ, विट्ठपरयमला पहीणरमण्ण । चउ-
पीस पि जिणपरा, तिथ्यपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्थिय-
पदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुगगो
हिलाम, समाहिवरमुत्तम दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइचेसु अहिय पयासपरा । नागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि
मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि एमाममणो वदिउ जाणसिज्जाण तिसीहि-
आए मत्तएण वदामि ॥ इच्छाभारेण सदिसद भगवन् !
, चट्ठपडिपुण्णा पोरिसी, राइयसथारण ठामि ? "इच्छ"

ये कहकर चउक्साव का चैत्यवन्दन करें—

चउकमायपडिमन्लुन्लूरणु, दुज्जवमयणवाणमुसु-
 मूरण । सरसपियमुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवण
 तयसामिउ ॥१॥ जसु तणुवतिकुडप्प सिणिद्वउ, सोहउ
 फणिमपिक्किरणा लिद्वउ, न नवजलहरतडिद्वयलछिउ, सो
 जिणु पासु पयच्छउ वल्लिउ ॥२॥

नमुत्थुण अरिहंताण भगवताण ॥ १ ॥ आइगराण,
 तित्थयराण, सयसमुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण,
 पुरिसवरपुडरीआण, पुरिसउरगघहत्थीण ॥३॥ लोमुत्तमाण,
 लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपईयाण, लोगपज्जोअग-
 राण ॥ ४ ॥ अमयदयाण, चसुउदयाण, मगदयाण,
 सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआण,
 धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मउरचाउरतचकरहीण
 ॥६॥ अप्पडिहयउरनाणटसणधराण, विअइळउमाण ॥७॥
 जिणाण जाययाण, तिन्नाण तारयाण, सुद्धाण बोहयाण,
 मुत्ताण मोअगाण ॥८॥ सत्तवभूय सत्तदरिसीणं, सिरमय-
 लमरुअमणतमउसयमआवाहमपुणरागिति, सिद्धिगइनाम-
 धेय, ठाण सपत्ताण, नमो निखाण, निअमयाण ॥९॥
 जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भगिस्सतिखामए काले ।
 सपइअ वट्टमाणा, सत्त्वे तिग्गिहेण वदामि ॥१०॥
 जाउति चेइआड, उड्डेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
 सत्त्वाड ताइ वदे, इह सतो तत्थ सत्ताड ॥१॥

इच्छामि समाप्तपणो वदिउ जावखिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥

जायत केवि माह, मरहेरवय मद्दाविदेहे थ । सन्धेमि
तेमि पणओ, तिनिहेण तिदइ विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्तिट्ठाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

उत्तसगइर पाम, पाम वंदामि कम्मपणमुक्क । विसहर-
विसनिनास, मगलरुद्धाण-आवास ॥१॥ विसहर फुलिगमत,
फठे घारेउ जो सया मणुओ । तस्स महरोगमारी, दुट्ठजरा
वति उवमान ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मतो, तुज्ज पणामो वि
पट्ठफलो होइ । नरतिरिएमु नि जीवा, पावति न दुक्खदोगधं
॥३॥ तुह सम्मत्ते सद्धे, चिंतामणिरुप्पपापयम्महिण ।
पावति अग्निपेण, बीया अयरामर ठाण ॥४॥ इय सधुओ
महायस, भत्तिन्मरनिम्मरेण दिअएण । ता देव दिज्जपोहिं,
मवे मवे पामजिणचद ॥५॥

(अथ दोनों हाथ जोडकर जय बीअराय कहना)

जय बीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पमारओ
मयव ! मवनिवेओ मग्गाणुमारिया इट्ठफलमिद्धि ॥१॥
लोगनिरुद्धाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरण च । सुहगुरुनोगो
तन्वपणसेवणा आमवमखडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि
निआण उधर्ण बीअराय तुह समए । तह नि मम हुज्ज
सेरा, मवे मवे तुम्ह चलाणा ॥३॥ दुक्खसुओ कम्मसुओ,

समाहिमरणं च बोधिलामो अ । सपञ्जउ महणअ, तुहनाह
पणाम करणेण ॥४॥ सर्वमगलमागन्ध, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधान सर्वधर्माणा जैन जयति शासनम् ॥५॥

इच्छामि सुमागमणो वदिउ जारणिज्जाण निमीदिघाण
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारण सद्विगइ मगपर । राउप-
सधारा एउ पदने क निमित्त मुदवनि पटिलेहुँ ? "इच्छ"
एसा कहकर सुत्पत्ति पत्तिहण कर संधार पोसिसि का पाठ पदे ।
निमीदि, निमीदि, निर्मादि, नमो सुमागमणाण गोप
माईण महापुणीण ।

नमो अरिहनाण । नमो निद्वार्य । नमो आयरियाण ।
नमो उरज्झायाण । नमो लोण मन्महाएण । नमो पच नपु
कारो । मन्वपाउप्पणामणो । मगलार्थं च मन्नेमि पडमं
इउइ मगल ॥१॥

करेमि भते । मामाडय, मानज्ज जोग पचकएामि । जार
पोसइ पञ्चुरामामि, दुविह विविहण मणेण धायाण
काएण न करेमि न कारवेमि तस्स भते । पडिक्कामि
निंदामि गरिहामि अप्पाण वोमिरामि ॥

(अनुक्रम से ये तीनों पाठ तीन दफे बोलना ।)
अणुजाणह जिट्ठिज्जा !

अणुजाणह परमगुरु ! गुरुगुरुस्यखेहि मंडियसरीरा ।
बहुपडिपुंजा पोनिमि, राह्यसधारण टाकि ॥

अनुवाकह सधर, नादुदहाखेया धामपासेत ।
 वृक्षुम्पियप्पमारु, अतरत पमज्जण भूमि ॥ ३ ॥
 मयोइथ मदाया, उव्वइते अ कापपडिलेडा ।
 दग्गाउव्वयोग उमामनिरुमणानोए ॥ ३ ॥
 लड मे इज्ज पमाथो, इमस्म दइम्मिमाड रयणीण ।
 आतामुगहिदह, मर निमिहण वोमिरिय ॥ ४ ॥

चत्तारि मगल—अरिहता मगल, मिद्धा मगल,
 माइमगल, केवल्लिपन्नो धम्मो मगल ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहता लोगुत्तमा, मिद्धा लोगुत्तमा,
 माइ लोगुत्तमा, केवल्लिपन्नो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि मरण परज्जामि—अरिहंते मरण परज्जामि,
 मिद्धे मरण परज्जामि, माइ मरण परज्जामि, केवल्लिपन्नत
 धम्म मरण परज्जामि ॥ ७ ॥

पाणाअपमलिय, धोमि मेहुए दरिणमुन्ठ ।
 जोइ माण माय, लोइ पिज्ज तहा दोम ॥ ८ ॥
 कलह अन्नमसाणो, पेपुअ रइ-अरइ-ममाउत्त ।
 परपरियाय माया-मोम मिच्छन्तमल्ल च ॥ ९ ॥
 वोमिरसु इमाड मुक्कमग्गममग्गविग्गभूआड ।
 दुग्गडनिवणोड, अट्टासम पायटाणाड ॥ १० ॥
 एगोऽह नत्थि मे जोइ, नाइवन्नस्य कम्पड ।
 एवं अदीणमणमो, अण्णाणमणुसासड ॥ ११ ॥

एगो मे सामओ अप्पा, नाणदसणसजुओ ।
 सेता मे पाहिरा भाग, सन्ने सजोगलकण्ण ॥१२॥
 सजोगमूला जीवण, पत्ता दुक्खपणं पगे ।
 तम्हा सजोगसव्व, सन्न तिविहेण वोसिरिअ ॥१३॥
 अरिदितो मम देओ, जाणज्जीर सुमाहुणो गुरुणो ।
 निनपन्नत्त तत्त, इअ सम्मत्त मए गहिअ ॥१४॥

(यह १४ वीं गाथा तीन बार कहे, पीछे सात नवकार गुण
 कर नीचे की तीन गाथा कहे)

सुमिअ सुमाविअ मइ सुमह, सव्वह जीरनिहाय ।
 सिद्धह मारु आलोयणह, मुज्झह रहर न माव ॥१५॥
 सव्वे जीरा कम्पउस, चउदहराज ममत ।
 ते मे सन्न सुमाविआ, मुज्झरि तेइ सुमत ॥१६॥
 ज ज मणेण वद्ध, जं ज वाएण भासिमं पाव ।
 ज ज कायेण कय, तस्स मिच्छामि दुक्ख ॥१७॥ इति॥

रात्रि को पोरिसी पढाने के बाद जब तक निद्रा न आवे तब
 तक स्वाध्याय ध्यान करे, संघारा दूसरे आशक के संघारे से कम
 से कम एक बत छेटी (एक विलासत दूर) विछाना । बाद में रात्रि
 के आगरी प्रहर में उठकर राई प्रतिक्रमण करना और सुबह
 स्थापनाचार्य जी का पढिलेइण और इरियावहि करने के बाद
 वरत्र आदि का पढिलेइण करना उसकी विधि इसी पुस्तक के
 पृष्ठ १५ की ४ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ वीं
 पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । बाद देववदन, सगमाय

करें रह पु तर म आगे दिया हुआ है । नेच दर्शन, गुरु वंदन
करक म ग हुये छडामण, कु छी, पानी बगैरा गृहस्थ को बापस
सभलवा देना पीछे आठ पहर का तथा रात्रि का पौषध पारना ।

याठ पहर क तथा रात्रि के पौषध पारने की विधि ।

इच्छामि सुमासमणो वदिउ जायसिज्जाए निमीहि-
याए मत्तएण वदामि ॥--

इच्छामारेण मदिमह भगवन् ! इरियागदिय पडिक्
मामि । इच्छ इच्छामि पडिक्मिऊं, इरियागदियाए, निराह
याए, गमणागमणे, पाणकमणे, बीयकमणे, हरियकमणे,
ओमा उतिग-पणम-दग-मट्टी-मक्कडासताणा सकमणे, जे
मे जीरा निराहिया एमिदिया बे.दिया, तेडदिया, चउरि
दिया, पचिदिया, अमिहिया उत्तिया, लेमिया, सघाइया,
मघट्टिया परियागिया, मिलामिया, उहविया, ठाणाओठाण
सकामिया, जीरियाओ वरगेरिया तस्म विच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पापच्छित्तकरणेण निमोहिक्करणेण,
विसल्लीकरणेण, पारार्थकम्माण निग्घाणण्डाए, ठामि
काउस्मग्ग ॥

अन्नत्थ उभमिएण, नीसमिएण, खासिएण, छीएण,
जमाइएण, उट्टुएण, तायनिसमोण, ममलिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहि अगमचालेहि, सुहुमेहि प्पेलसचालेहि, सुहुमेहि
त्रिगलालेहि तत्तत्तत्तत्ति

हृज्ज मे काउत्सग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुका
रेण न पारेमि ताव काय ठाण्णं मोखेण भाण्णं अप्पाणं
वोमिगमि ।

(यहाँ एक लोगस्स का या चार नमस्कार का काउत्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोमगर, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिहते
किनइस्स, चउरीस पि केउली ॥१॥ उसममजिच्च च वंदे,
समउमभिणदण च सुमई च । पउमप्पइ सुपास, जिणं च
चदप्पइ वंदे ॥२॥ सुणिहिं च पुप्फटत, मीअल-मिज्जस
वासुपुज्ज च । निमलमणतं च जिण, धम्म सतिं च
वदामि ॥३॥ कुट्टु अर च मट्ठि, वटे मुणिसुव्वय नमि-
जिण च ॥ वदामि रिट्ठनेमिं, पास तइ वद्धमाण च ॥४॥
एव मए अमिधुआ, निहुयस्यमत्ता पदीणजरमरणा । चउ-
वीम पि जिणवरा, तिथ्यरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिव-
वदिय-मडिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरग्गवो
हिलाम, समाहिक्खमुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलपरा,
आदच्चेसु अदिय पयामपरा । सागरवसगमीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि समासमणो वदिठ जावणिज्जाए निसीहि-
आण मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसइ भगवन् !

चउपत्ति पडिल्लेहुँ !

(ऐसे कहकर मुहपचि पहिलेदना-पीछे समासमण देना-)

इच्छामि समासमणो रदिउ 'जागणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छामारेण मदिसइ भगवन् !
पोसइ पारामि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि समासमणो वदिउ जागणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ? इच्छामारेण मदिसइ भगवन् !
पोसइ पारामि 'तद्वत्ति'

(कहकर दाहिने हाथको चरचल पर रखकर मस्तक मुफारर
एक नेवकार मन्त्र बोले फिर "सागर चन्दो" की पोषध पारने की
गाथा कहे —

नमो अरिहताय । नमो मिद्धाय । नमो आपरियाय ।
नमो उवज्झायाय । नमो लोए सबमाहूय । एसो पच्च
नमुकारो । सत्थ पावप्पणामणो । भगलाय च मवेसि ।
पढम हउड भगल ॥

"सागर चन्दो कामो, चन्दबडिसो मुदसणो धन्नो ।
जेमि पोसइ पडिमा, असुडिआ जीवियते रि ॥१॥
घन्ना सलाहणिज्जा, मुलसा आणद कामदेवा य ।
जाम पसस भयव, दद्वयच महावीरो ॥२॥

पोसइ विवि मे लिया विधि से पार विधि करने जो कोई
अविधि 'हुई हो वह सब मन वचन काया करके
मिच्छामि दुकई

इच्छामि त्रमासमणो यदिउ जागणिज्जाए निमीदि
थाए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
मुदपत्ति पडिलेहुँ ?

(एत कहकर मुदपत्ति पडिलेहुना—पीछे समासमण देता—)

इच्छामि त्रमासमणो यदिउ जागणिज्जाए निमीदि-
थाए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
सामायिथ पारेमि ? 'पयाशकि'

इच्छामि त्रमासमणो यदिउ जागणिज्जाए निमीदि-
थाए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
सामायिथ पारिय 'तहत्ति'

(एत कहकर गहिने हाथ को चरखल पर रखकर महक
मुनाकर ता नवकार मर पडकर 'सामायिअययजुत्तो'
सूत्र पढे)—

नमो अरिक्काय । नमो सिद्धाय । नमो आयन्धियाय ।
नमो उयज्झायाय । नमो लोए मच्च साहए । एसो पच
नमुवारो । सच्च पावप्पणासणो । मगलाय च मग्गेमि ।
पढम हवइ मगल ॥

सामायिसययजुत्तो, जाग मणे होई नियमयजुत्तो ।
जिन अमुह कम्म, सामाअज्जत्तिया वारा ॥१॥ सामाअ-
यमि उ रए, समणो इव सागओ हवइ जम्हा । एएण
पहुमो सामाअय बुज्जा ॥२॥

मन सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण क्रिया,
विधिसे जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुःख ।

दस मनके, दस उचनके, रागद काया के ये कुल बत्तीस
दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुःख ।

दिन के चार पहर का पौषध पारने की विधि ।

देवमी या पाक्षिगान्धि (पक्षी बगैरा) प्रतिक्रमण करने के
बाद पौषध पारने के पहिले मागे हुए उदाहरण कु छी, पानी बगैरा
गृहस्थ को वापिस सभलता देना पीछे समासमण देकर
हरियारादि करके चउकसाय चैत्यचन्त करे, उसकी विधि
इसी पुस्तक के पृष्ठ २८ की ४ थी पक्ति से आरम्भ होकर
पृष्ठ ६० की ३ री पक्ति तक (जैन जयति शासनम् ॥२॥ तक)
दिया है उसने अनुसार करें । बाद में समासमण देकर पौषध
पारने की मुहपक्ति पहिलहन करें उसकी विधि इस पुस्तक के
पृष्ठ ६६ की १६ वीं पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६६ की ४ थी
पक्ति तक दिया है उसके अनुसार पारें ।

❀ इति पौषध विधि समाप्त ❀





ॐ श्री बीतरागाय नमः ॐ

✽ त्रिकाल-देवकन्दन विधि ✽

(अथ देवकन्दन)

देवकन्दन करने वाला श्रावक भाविका पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (याजोट) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नव फारपाली) आदि रखकर, जमीन पृथ्वी, आसन विछार, चर बला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुरारके आगे रखकर दाहिने हाथ की स्थापन नित्ये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नमस्कारमन्त्र पढ़ें।

नमो अरिहताय । नमो सिद्धाय । नमो आयरियाय ।
नमो उज्जमायाय । नमो लोए मन्त्रमाह्वय । एसो पच
नमुकारो । सव्यपावप्पखासखो । मगलाय च सवेमि पढम
इयइ मगल ॥१॥

पचिदियसवरणो, तह नवनिहवमचेरुतिधरो । चउ-
निहकसायमुको, इअ अट्टारम गुणेहि सजुतो॥१॥ पच मह-

व्ययनुतो पचमिहापारपालणसमथो । पचममिथो त्रिगुतो,
छत्तीमगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पचिदिय बहे, यदि प्रथम से उस स्थान पर आचार्य
प्रमुख को स्थापना की हुई हो तो यदा पचिदिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि एवमामणो वदिउं आगणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥

इच्छामि एवमामणो वदिउं आगणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छामि पठिपमिउं, इरियारहियाण, त्रिगु-
णाए, गमणागमणे, पाण्डमणे, धीपडमणे, हविपडमणे,
ओसा, उरिग-पणग-दग-मई मइडामताणा मयडमणे, इ
मे जीया निराहिया णणिदिया वेडदिया, तेडगिया, इच्छा-
दिया, पचिदिया, अमिहिया वत्तिया, लेमिया मयडम
मयडदिया, परियारिया, तिलामिया, उरिया, टाण्डमिया,
सकामिया, लीगियाओ वगोयिया तम्म निच्छाए इच्छा ।

तम्म उत्तरीकरणेण, पापच्छित्तमगण्डे निमज्जीकरणेण,
पावाण कम्माणं निमज्जीकरणेण, टाण्डमिया,
काउस्मग ॥

अन्नत्थ उत्तमिएण, नीसमिएण, नालेण, मयडम
जमाडएण, उडुएण, वायनियमणे, मयडम निमज्जीकरणेण
मुहुमेहि अगसचालेहि, मुहुमेहि मयडम निमज्जीकरणेण
दिदिसचालेहि, एवमएणहि मयडम निमज्जीकरणेण

हुज्ज मे काउम्मगो । जाव अरिहताण मगरताण, नमुवा-
रेण न पारमि ताव काय ठाणेषु मोणेषु भण्णेषु अप्पाण
वोमिरामि ।

(यह! एक लोगस्स का या चार नवकार का काउत्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स बढना, वह नीचे लिखे अनुसार)

। लोगस्म उज्जोयगरे, धम्मति यथरे जिणे । अरिहते
कित्तइस्म, चउमीस पि केवली ॥१॥ उम्ममज्झिअ च वंदे,
समउमभिणुदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपासं, जिण च
चदप्पह वढ ॥२॥ सुविहिं च पुण्णदत्त, सीअल सिज्जत
वातुपुज्ज च । विमलमणत्त च जिण, धम्म सत्तिं च
वदामि ॥३॥ कुपु अर च मल्लि, वदे मुत्तिमुच्चय नमि-
जिण च ॥ वदामि रिद्धनेमि, पास वह वद्धमाण च ॥४॥
एव मए अभियुआ, रिट्ठयग्यमला पदीणजरमरणा । चउ-
मीसं पि जिणवरा, वित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिर-
वदिय-मडिया, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आहम्मरो
हिलाभ, समाहिवरमृत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलपरा,
आइचेसु अहिय पवासपरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसतु ॥७॥

(अब उत्तरासन डालकर प्रसासण कर चैत्यवन्दन करें)

इच्छामि एमोममणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह मगवन् !
चैत्यवदन करूँ ? “इच्छ” ।

ॐ चैत्यवदन ॐ

श्री शत्रुघ्नय मिदुत्तेर, दीठ दुर्गति गारे ।

भाउ घरी ने जे चढे, तेने भय पार उतारे ॥१॥

अनत सिद्धनो एह ठाम, मफल तीर्थनो राय ।

पूर्व नराणु ऋषमदर, ज्या ठगिया प्रभुपाय ॥२॥

सुरज ॥ ६ ॥ सोहामणे, वज्रलचक्षमिराम ।

नामिराप कुल मङ्गळो, जिनगर करु प्रणाम ॥३॥

ज किंचि नामतिष्ठ, सग्ले पायालि माणुसे लोण ।

जाडनिष्ठागिराड, ताड सत्राड वदामि ॥४॥

नमुत्पुण्य अरिहताण मगजताण ॥ १ ॥ आंगराण,

विश्वयराण, मय मधुद्धाण ॥२॥ पुरिमुत्तमाण, पुरिसमीहाण,

पुरिसगरपुठरीभाण, पुरिसगरगवहृथीण ॥३॥ लोमुत्तमाण,

लोगनाहाण, लोगदिआण, लोगपदंराण, लोगपञ्चोअग-

राण ॥ ४ ॥ अमपदयाण, चक्रवुदयाण, मगदयाण,

सरणदयाण, बोडिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मडेमियाण,

धम्मनायगाण, धम्ममारहीण, धम्मररचाउरतचक्रवृद्धीण

॥६॥ अम्पडिहयररनाणटसणधराण, मिअड्डउमाण ॥७॥

जिण्णण जावयाण, तिनाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण,

मुत्ताण मोअगाण ॥८॥ सत्रबूण सत्रदरिसीण, मिरमय-

लमअयमणुतमसयमत्रागाहमपुणरागिचि, सिद्धिगडनाम-

घेय. ठाण मपचाण, नमो जिण्णण, जियमयाण ॥९॥

जे अ अइया मिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए फाने ।
मंपदम घट्टमाणा, सचे तिविहेणु वदामि ॥१०॥

(अथ दोनों हाथ जोड़कर जय वीथराय कहना)

जय वीथराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पमागमो
मगप ! मयनिचेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥
॥॥गविग्गासाओ, गुरुजणपूआ परत्थरुण च । मुहगुरुजोगो
म गगलसोगा आमवमउडा ॥२॥

इच्छामि समासमणो यदिउ जावणिज्जाए निमीहि-
आए ॥॥मण पंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
वीथराय फलं ? "इच्छा"

॥ श्रीविवस्वता ॥

धी गीमभर जगधनी, आ मरते आगे,
पदगारव करुणा करी, अमने वदारो ॥१॥

मरुल मरु तुमे धणी, एजो होवे अमनाथ,

मयोभय हुं तु ताहरो, नदी

सयल सग छसीरुसी.

पाप तुमारा

ए अलनो

इहां

नमुत्पुण्य अरिहताण्य भगवंताण्य । आहगराण्य तित्थ
 पराण्य सयसबुद्धाण्य । पुरिसुत्तमाण्य पुरिसमीहाण्य पुरिस-वर
 पुडरीयाण्य पुरिसर-गघदत्थीण्य । लोमुत्तमाण्य लोगनाहाण्य
 लोगहियाण्य लोगर्द्धाण्य लोगपज्जोयगराण्य अमयदयार्य
 चरसुदयाण्य मग्गदयार्य भरखट्टयाण्य बोहिदयाण्य धम्म-
 दयाण्य धम्मदेमयाण्य धम्मनायकाण्य धम्ममातहीण्य धम्मर-
 घाउरत चक्कड्डीण्य अप्पडिहयवरनाण्टसणधराण्य विअड्ड-
 उमाण्य जिण्णाय जावयाण्य, तिनाण्य तारयाण्य, बुद्धाण्य
 बोहयाण्य, मुत्ताण्य मोअगाण्य सत्थभूण्य सवदरिसीण्य,
 मियमयलमरअमण्यतमक्कयम-गगाइमपुण्यरावित्ति, सिद्धिगद
 नामधय ठाण्य सपत्ताण्य, नमो जिण्णाय जिअमयाण्य ।
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भरिस्मति आगए काले । सपडअ
 वड्डमाणा, सम्मे तिनिहेण्य वढामि ॥

अग्निहत्तवेदमाण्य ऊरेमि काउस्मग्ग, वदण्यरत्तिआए,
 पूअण्यरत्तिआए, सद्धारत्तिआए सम्माण्यवत्तिआए बोहि
 लामरत्तिआए, निम्भसम्भरत्तिआए, सद्धाए, मेहाए,
 धिईए, धारणाए, अणुप्पहाए, वड्डमाणीए, ठामि
 काउस्मग्ग ॥

अचत्थ ऊसमिएण्य, नीससिएण्य, पासिएण्य, छाएण्य,
 ज्माइएण्य, उड्डुएण्य, वायनिसम्भेण्य, भमलिए पित्तमुच्छाण्य,
 सुद्धमेहिं अगसुत्तालेहिं, सुद्धमेहिं खेलसचालेहिं, सुद्धमेहिं-

दिडिमचालेहिं, एरमाएहिं आगारेहिं भमम्भो अपिराहियो
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुका
रेण न पारेमि ताव कायं ठायेण मोखेण भायेणं अप्पाण
ओस्सिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा
ध्याय सर्वसाधुभ्य ” कहकर शुद्ध कहना—

रुद्राणरुद्र षष्ठम जिणिंद, मर्नि तओ नेमिजिण मुणिंद ।
पास पयाम सुमुखियठाण, भवीइ वद सिरियद्धमाण ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मवित्थयरे निखे । अरिहते
क्खित्तस्स, चउगीस पि केउली ॥१॥ उत्तममज्झिअ च वद,
सममममिणदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपास, जिण च
चदप्पह वद ॥२॥ सुविहि च पुप्फदत्त, तीअल सिज्जस
वासुपुज्ज च । तिमलमणत्त च निण, धम्म सत्ति च
वदामि ॥३॥ कुयुं अर च मल्लि, वद मुखिरुव्वय नमि-
निण च ॥ वदामि रिडुनेमि, पास तद वद्धमाण च ॥४॥
एव मए अभिदुआ, विट्ठययमत्ता पद्दीणजरमरणा । चउ-
पीस पि जिणवरा, वित्थयरा मे पमीयतु ॥५॥ रिच्चिय-
वदिय-महिया, ज ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवी
हिलाय, समाहिअग्गुत्तम दिंतु ॥६॥ चटेसु निम्मलयरा,
आइचेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा मिद्धि
मम दिसतु ॥७॥

सरलोए अरिहत्तचेडथाए, करेमि काउस्मग्ग वदण-
चत्तिआए, पयणवत्तिआए, सक्करवत्तिआए, मग्गणवत्ति-
आए, बोहिलामवत्तिआए, निरुपसग्गवत्तिआए, सट्ठाए,
मेहाए, धिरंए, धारणाए, अणुप्पेहाए, उड्डमाणीए, ठामि
काउस्मग्ग ।

अन्नत्थ ऊमसिएण, नीमसिएण, खासिएण, छीएण,
जमाहणए, उड्डणए, वायनिसग्गेण, भमलिण, पित्तमुञ्छाण,
सुट्टमेहिं अगसचालेहिं, सुट्टमेहिं खेलमचालेहिं सुट्टमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एवमाहणहिं आगारेहिं थमग्गो थरिगहियो
हुज्ज मे काउस्मग्गो, जार अरिहत्ताए भगवताए, नमु-
कारेण न पारेमि, जार राय ठाण्णेण मोण्णेण भाण्णेण
अप्पाए वोसिगमि ॥

(एक नवकार का काउस्मग्ग करने प्रकट करलाएन्द की
दूसरी थुड नीचे ति ने अनुसार बहना)

अवारससारसमुदवार, पत्त निर त्ति सुक्खसार ।
सत्ते निखिदा सुगग्गिदग्गदा, उल्लाणउल्लीण निमालग्गदा ॥२॥

पुक्खरवरदीउड्डे, घायडसड अजवुदीव अ । मरहरण-
विदह, धम्मणग्गरे नमसामि ॥१॥ तम विमिर-पडल विद
सणस्स भुरगणनरिदमहिधस्म । सीमाधरस्स वद, पण्णोडिथ
मोहजालस्स ॥२॥ बाईजरामरखसोगपणासणस्स, उल्लाण-
पुनपुल निमाल-सुहारडस्स । को २

धम्मस्स सारमुवल्लभं करे पमाय ॥३॥ सिद्धे भो ! पपञ्चो
 खमो निणमणं नदी सया सज्जमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणस्म-
 भ्भूअभाउच्चिण । लोगो जत्थ पडट्टियो जगमिण तेलुवमद्या
 सुर, धम्मो वड्डउ सासओ निजयओ धम्मत्तर वड्डउ ॥४॥
 सुअम्स भगवओ करेमि काउस्सग्ग । वदणउत्तिआए, पूअण
 वत्तिआए, सङ्कारउत्तिआए, सम्माणउत्तिआए, बोहिलामव-
 त्तिआए, निरयसग्गउत्तिआए । सट्ठाए मेहाए धिइए
 धारणाए अणुप्पेहाए वड्डमाणीए ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ उममिएण नीससिएण, एसिएण छीणए,
 जमाइणए, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमलिए, पित्तमुञ्छणए,
 सुट्ठुमेहिं थगसचालेहिं, सुट्ठुमेहिं, खेलसचालेहिं, सुट्ठुमेहिं
 दिट्ठिसचालेहिं, एवमाएहिं आगारेहिं, अमग्गो अनिराहिओ
 हृज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जार अरिहताण भगवताण नमु-
 कारणा न पारमि, ताव काय ठाणेण मोणेण भाणेण
 अप्पाण बोसिरामि ॥

(एक नववारका काउस्सग्ग करके प्रकट 'कल्लाणस्स' की
 तीसरी पुङ्ग कहना)

निज्वाणमग्गे वरजाणकप्प, पणामियासेसकुनइदप्प ।
 मय जिणाण मरुण पुहाण, नमामि निच तिजमप्पहाण ॥३॥

सिद्धाण पुद्धाण, पारमयाण पपरमयाण । लोअग्ग-
 सुअग्गयाण नमो सया मवमिद्धाण ॥१॥ जो दयाण नि

दवो, ज देवा पनली नममति । त देवदेवमहिम्न, मिग्मा
 वद महाग्रीर ॥२॥ इवो वि नमुक्कसो, निणवरवसहस्स
 वद्धमाणस्स । ससारसागराथो, तारेइ नर व नारि वा ॥३॥
 उज्जितसेलसिद्धरे, दिक्खानाण निमीहिंया जस्म । त
 घम्मचक्खहिं, अरिद्धजेमि नमसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दम
 दो, य रदिपा जिणवरा चउत्थीम । परमट्ठ निट्ठियट्ठा,
 सिद्धा मिद्धि मम दिससु ॥५॥

वेपायच्चगराण सतिगराण सम्मदिट्ठिसमाहिगराण
 करेमि काउस्मग्ग ॥

असत्थ उमसिएण, नीमयिण्ण, एसिएण, छीएण,
 जमाएण, उट्ठुएण, धायनिमग्गेण, ममलिण पिसमुच्छाण
 सुट्ठमेहिं अगसचालेहिं, सुट्ठमेहिं गेलसचालेहिं सुट्ठमः
 दिट्ठिमचालेहिं, एवमाउएहिं आगारेहिं अभग्गो अनिरादियो
 हुज्ज मे काउस्मग्गो, जार अरिहताण भगरताण, नमु-
 कारेण न पारमि, ठान काय ठाणेण मोणेण भाणेण
 अण्णाण वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्मग्ग पारकर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्य
 पाध्याय सर्वसाधुभ्य बहुरर ‘कलाणवद’ की चौथी बुद्ध कहना
 बुद्धिदुगोमपीरतुमारवन्ना, सरोनहत्था कमले निसन्न
 वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, मुहाय सा अम्ह मया पमत्था ॥४

नमुत्पुण्य अरिहताण्य भगवताण्य । आङ्गराण्य तित्थ-
पराण्य सयसमुद्गाण्य । पुरिमुत्तमाण्य पुरिससीहाण्य पुरिम रर
पुढरीआण्य पुरिमरर गधदत्थीण्य । लोमुत्तमाण्य लोगनाहाण्य
लोगहिआण्य लोगपर्दण्य लोगपज्जोअगराण्य अमयदयण्य
चक्सुदयण्य मग्गदयण्य मरणदयण्य बोद्धिदयण्य धम्म-
दयण्य धम्मदेसयण्य धम्मनायगाण्य धम्मसारहीण्य धम्मवर-
चाउरत चक्कनङ्गीण्य अप्पटिहयवस्सणाण्डसणधराण्य विअट्ट-
उमाण्य निणाण्य जाययाण्य, विनाण्य तारयाण्य, दुट्ठाण्य
गोहयाण्य, सुत्ताण्य मोअगाण्य सन्नमूण्य सवदरिमीण्य,
मिअमयलमरअमण्यतमकसयम-गगाहमपुण्यारित्ति, मिद्धिगड
नामधेय ठाण्य सयत्ताण्य, नमी निणाण्य जिअमयाण्य ।
जे अ अईया सिद्धा, जे अ भरिस्मति खाण्य काले । सपइअ
वट्टमाणा, स-ने तिग्गिहेण्य उदामि ॥

अरिहतचेइआण्य करेमि काउस्सग्ग, वदणवत्तिआए,
पूअणवत्तिआए, सकारवत्तिआए मग्गाण्यवत्तिआए बोहि-
त्तामवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआण्य, मट्ठाए, मेहाए,
धिर्दए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वट्ठमाणीए, ठामि
काउस्सग्ग ॥

अनत्थ उत्तसिएण्य, नीसमिएण्य, एसिएण्य, छीएण्य,
जमाइएण्य, उड्डुएण्य, वायनिसग्गेण्य, भमन्निए पिनमुच्छाए,
सुट्टमेहिं अगसचाल्लोहिं, सुट्टमेहिं खेत्तसचाल्लोहिं, सुट्टमेहिं

निद्रिमचानेहि, एवमाट्णहि आगारहिं भमगो अपिराहिओ
हुज्ज मे काउस्मगो । जय अरिहताण मयताण, नमुका-
रण न पारेमि तार राय ठाणेण मोखेण भाणेण अप्पाण
वोमिगामि ।

(१५५ नमस्कार का काउस्मग कर “नमोऽर्हन्तिद्धाचार्याणा
ध्याय सर्वेसाधुभ्य ” कहकर थुड कहना—

शत्पेश्वर पामची पूजीण, नरमनो लाठो लीजीए;
मनरञ्जित पूण सुगतरु, जय वामासुत अलवेमरु ॥१॥

लोगस्म उज्जोयगरे, घम्मवित्थयर निखे । अरिहते
चित्तइस्म, चउवीस पि केरली ॥१॥ उमममनिअ च वद,
ममरमणिणदण च सुमइ च । पउमण्ह तुपाम, जिण च
चदप्पइ वद ॥२॥ सुविहिं च पुण्हदत, सीअल-सिज्जस
वासुपुज्ज च । विमलमणत च जिण, घम्म सतिं च
वदामि ॥३॥ कुधु अर च मज्झि, उद मुण्हितुव्वय नमि
जिण च ॥ वदामि तिङ्गेमिं, पास तद वदमाण च ॥४॥
एव मए अमियुआ, निहयग्यमला पहीणजरमण्णा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, वित्थयरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिअ-
वदिय-महिषा, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुगरो
हिलाम, समाहिवरमुचम दिंतु ॥६॥ चदसु निम्मलयरा,
आइचेसु अदिय पयासवरा । मागरवरगमीरा, मिद्धा मिद्धि
मम दिसतु ॥७॥

सत्यलोए अरिहत्तचेडथाण, ऊरेमि काउम्मसग्ग उदण-
वत्तिआए, पूयणवत्तिआए, सवाणवत्तिआए, सम्माणवत्ति-
आए, रोहिलाभरत्तिआण, निरुम्मग्गवत्तिआए, सद्दाए,
मेहाए, धिदए, धाण्णाण, अणुप्पेहाण, चड्ढमाणीए, ठामि
काउम्मग्ग ।

अनत्थ ऊम्मिएण, नीमसिएण, खाणिएण, छीएणं,
जमाइएण, उड्डएणं, वायनिमग्गेण, ममलिए पित्तमुच्छ्राए,
सुहमेहिं अगमचालेहिं, सुहमेहिं खेत्तसचालेहिं, सुहमेहिं
दिट्ठिमचालेहिं, एग्गमाइएहिं आगारहिं अमग्गी अरिराहिओ
हज्ज मे काउम्मग्गो । जाण अरिहताण भगवताण, नमुक्का-
रेण न पाणमि ताण काय ठाण्णेण मोण्णेण भाण्णेण अप्पाणं
वोसिरामि ।

(एक नमस्कार का काउम्मसग्ग करके दूसरी धुइ नीचे लिखे
अनुसार कहना)

दोय राता निनरर अति भला, दोय धोला निनरर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल रुणा, सोले जिन कचन वर्ण लम्मा ॥२॥

पुक्कयग्गदीरड्ढे, घायइमड्ढ थ जवुदीवे थ । भग्गेरवय-
विदेह, धम्मादगरे नमसामि ॥१॥ तम विमिर-पडल विद्धं
सणस्म सुग्गणनरिंदमहिप्पस्म । सीमाधरस्म वट, पप्फोडिअ
मोहजालस्स ॥२॥ जार्दजराभरणसोगण्णासणम्म, कल्लाण-
पुम्बल विसाल-सुहाण्डस्स । को देवदाणवनरिंदगणधियस्स,

धम्मम्म सारस्सल्लभ कर पमाय ॥३॥ सिद्धे मो ! पयथो
 शमो निणमए नदी मया स जमे, देवनागसुवन्नकिन्नग्गणस्स
 धूयभायच्चिए । लोगो जत्थ पड्डिमो जगमिण तेलुइमच्चा
 सुर, धम्मो वड्डउ मासओ विजयओ धम्मुत्तर उड्डउ ॥४॥
 सुअस्म भगरओ करमि राउस्सग्ग । उदणत्तिआए, पूअण-
 यत्तिआण, सक्कायत्तिआए, सम्माणयत्तिआण, मोहिलाभव-
 त्तिआण, निस्समगरत्तिआए । मद्राए मेहाण धिआ
 धारणाण अणुप्पंहाए वड्डमार्त्ताए ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ उमनिएण नीतसिएण, सासिएण छीएण,
 जमाउएण, उड्डएण, वायनिसग्गेण, ममलिए, पित्तमुच्छाए,
 सुहमेहिं अगमचालेहिं, सुहमेहिं, खेलसचालेहिं, सुहमेहिं
 दिट्ठिमचालेहिं, णवमाउण्ठि आगारहिं, अमग्गो यरिराहिओ
 इज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाय अरिहताण भगरताण नमु-
 कारेण न पारेमि, ताव काय टोखेण मोखेण भाणेण
 अप्पाणा वोमिगमि ॥

(एए नयकारका काउस्सग्ग तीसरी सुइ कहना)

आगम ते जिनवर भावियो, मण्णर ते इंड रात्तियो,
 तेनो रम जेखे चात्तियो, ते ह्वो शिवमुख सात्तियो ॥३॥

सिद्धाण बुद्धाण, पारगयाण फपरगयाण । लोअग्ग-
 मुवगपाय नमो सप्पा सज्जमिद्धाण ॥१॥ जो - १

देवो, ज दया पजली नमसति । त देवदेवमदिभ्यं, मित्रमा
वदे महावीर ॥२॥ इवो वि नमुवागे, जिणवरवमहम्म
वद्धमाणस्स । समारमागराथो, तारेइ नर व नारिं रा ॥३॥
उज्जितसेलमिदरे, दिक्खानाण निमीदिथा जस्म । त
धम्मचइरहिं, अरिद्धेनोमि ननसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस
दो, प वट्ठिपा निणगरा चउत्थीस । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा,
मिट्ठा मिट्ठि मम दिसतु ॥५॥

ययापघमराण सतिगराण सम्मदिट्ठिसमाहिगराण
करमि काउस्मग्ग ॥

अमरथ ऊमसिण्ण, नीममिण्ण, खामिण्ण, छीण्ण,
जमाडण्ण, उट्ठुण्ण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छ्राण,
सुहुमेहिं अगमचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं सुहुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एवमेडण्णिं आगारहिं अमग्गो अरिराहिओ
हुज्ज मे काउस्मग्गो, जान अरिद्धताण भगवताण, नमु-
कारण न पारमि, ताव काय ठाण्णेण मोण्णेण भाण्णेण
अप्पाण वोमिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्मग्ग पारकर “नमोऽहन्तिद्धाचार्यो
पाभ्याय सर्वसाधुभ्य बह्वर बोधी बुद्ध कहना)

धरणीधरराय पञ्चावती, प्रभु पारर्य तणा गुण गावती,
सद्गु सधना सकट चूरती, नय विमलनो वल्लित पूरती ॥४॥

नमुत्पुण अरिहताणं भगवताण ॥ १ ॥ आङ्गराणं,
 तित्थपराण, सयसबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिमसीहाण,
 पुरिसवरपुडरीभाण, पुरिसपरणघट्ठवीण ॥ ३ ॥ लोमुत्तमाण,
 लोगनाहाण, लोगढिआण, लोगपद्माण, लोगपज्जोत्थग-
 राण ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्रुदयाण, मग्गदयाण,
 सरणदयाण, रोहिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाण, धम्मदेसिआण,
 धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मपरचाउरतचकण्डीणं
 ॥ ६ ॥ अप्पडिहयपरनाणदमणधराण, त्रियदृच्छउमाण ॥ ७ ॥
 जिणाण जायपाण, तिनाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण,
 मृत्ताण मोथगाण ॥ ८ ॥ मच्चम्भूख सच्चदरिसीण, सिरमप-
 लमरुअमणतमकपुयमपागाहमपुणरानित्ति, सिद्धिगानाम-
 धेय, ठाण सपताण, नमो निणाण, त्रियमपाण ॥ ९ ॥
 जे थ अइथा सिद्धा, जे थ मरिस्सतिणाए गले ।
 सपइअ वड्डमाण, सवे तिमिहण वदामि ॥ १० ॥

जारवि चेइआइ, उड्डेअ अहे थ तिरिअ लोए थ ।
 सत्थाइ ताइ गदे, इइ सतो वत्थ सवाइ ॥ ११ ॥

इच्छामि एमाममणो गदिउ जारखिज्जाए निसीहि
 आए मत्थएण वदामि ॥

जाअत केवि साह, मरहरणय महाविदेह थ । यचेमि
 तेमि पणयो, तिमिहण तिदइ तिरयाण ॥ १२ ॥

नमोऽर्हत्तिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उरमागदर पार्श्व, पास उदामि रुम्मघणमुष । त्रिसहर-
 त्रियनित्रास, मगलरुद्धाण आराम ॥१॥ त्रिसहर कुलिंगमत,
 कठे धारेइ जो सया मणुथो । तस्म गइरोगमारी, दुइतरा
 जति उरसाम ॥२॥ चिट्टउ दूरे मतो, तुज्ज पणामो रि
 षट्फलो होइ । नरतिगिएसु रि जीया, पावति न दुस्सुदोगण
 ॥३॥ तुह सम्मत्ते लडे, चिनामणिकप्पपायउम्महिए ।
 पावति अविग्गण, जीया अयरामरं ठाण ॥४॥ इय सधुओ
 महायस, भत्तिन्मरनिमरेण हिअण्ण । ता देव दिज्जमोहि,
 मवे मवे पासजिणचद ॥५॥

ॐ स्तवन ॐ

प्रथम जिनेधर प्रणमीए, जस्य सुगधीरे काय ।
 कल्पवृक्ष परे तास इद्राणी नयन जे, भृ गपरे लपटाय ॥१॥
 रोग उरग तुज नरि नडे, अमृत जे आस्वाद ।
 तेहथी प्रतिहत तेह मानु कीइ नरि करे, जगमा तुमशु रे बाद ॥२॥
 बगर धौइ तुज निर्मली, काया कवन रान ।
 नहि प्रस्वेद लगार तार तु तेहने, जे धरेताइहं प्यान ॥३॥
 राग गयो तुज मनयसी, तेहमा चित्र न कोष ।
 रुधिर आमिपकी राग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय ॥४॥
 आसोच्छ्वास कमलसमो, तुज लोकोत्तर बाद ।
 दसे न आहार निहार चर्मचतु धणी, एहमा तुन अगदाउ ॥५॥
 चार अतिशय मूलकी, थोगणीश देवना कीध ।

कर्म सुप्यायी अग्यार चोरीश एम अतिरुया, ममरायागे प्रमिद्ध
चिन उत्तन गुण गावता, गुण थार निन थन ।

पमरिन्थ ऋहे एह ममय प्रमु पालनो, जेम थाउ अक्षय अमगा । ७ ।

(अथ दोना हाथ जोडछर अथ वीअराय कहता)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ मर्म तुह पमारओ
मयव ! मरनिन्वओ मगाणुसारिआ इट्ठलमिदि ॥१॥
लोगरिद्धाओ, गुणणपूआ पत्थकरण च । मुहगुरुनोगो
तज्जपणसेरणा आमरमउडा ॥२॥

इच्छामि सुमाममणो वदिउ आरणिज्जाए निमीदि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् !
चैत्यवन्दन करू ? "इच्छ"

ॐ चैत्यवन्दन ॐ

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुरन स्वामी ।
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, परन राडि पावे ॥ १ ॥
प्रभु नामे आनद रुद, सुण सपत्ति लहिये ।
प्रभु नामे मय मय तणा, पातरु दुख दहिये ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी ए, जपीण पार्श्व नाथ ।
रिप अमृत यद् परिणमे, पावे अविचल ठाम ॥ ३ ॥

ज किंचि नामतित्थ, मग्गे पायालि माणुसे लोए ।
आइं निणरिवाइ, ताइ सन्नाइ वदामि ॥

नमुत्तुण अरिहताण भगवताण । आङ्गराण तित्थ-
 मराण मपमत्तुद्धाण । पुरिसुत्तमाण पुरिसमीहाण पुगिस-वग्
 पुट्टरायाण पुरिमवर गघहत्थीण । लोगुत्तमाण लोगनाहाण
 लोगहिआण लोगपद्दाण लोगपज्जोअगराण अभयदयाण
 वक्खुदयाण मग्गदयाण मरणदयाण बोहिदयाण धम्म-
 दयाण धम्मवेमयाण धम्मनापगाण धम्मसारहीण धम्मर-
 चाउरत चवरहीण अप्पडिहयवरनाणदसणधराण निअट्ठ-
 उमाण जिणाय जाययाण, तिनाण सारयाण, बुद्धाण
 बोहयाण, मुत्ताण मौअगाण स-उत्तूण सबदरिसीण,
 निरमयलमरुअमणतमसुत्तम-गागादमपुणरारित्ति, मिद्धिगद
 नामधेय टाण सपत्ताण, नमो जिखाण निअमयाण ।
 जेअ अईआ मिद्धा, जेअ भविस्मति यागण सत्ते । मपडअ
 बट्टमाणा, स-रे तिविहण उदामि ॥

(अर दोनो हाउ जोडर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पमारयो
 भयत्र ! भवनि वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलमिद्धि ॥१॥
 लोगनिरुद्धाओ, गुम्जणपूया परत्थमरण च । मुहगुरुजोगो
 तन्वयणसेण । आभममउडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ नि
 निआण वधण वीअराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज
 सेग, भवे भवे तुम्ह चलखाण ॥३॥ दुक्खसओ कम्मसओ,
 आदिमरण च बोहिलामो अ । सपज्जउ महएअ, तुहनाह

पणाम करणेषु ॥४॥ मर्ममगलमागम्य, मर्मन्याणामगमम् ।
प्रधान मर्मधर्माणां जैन जपति शामनम् ॥५॥

(षोडश)

विधि रग्न दृष्ट कीट अरिपि दुर्द्विहो नस्म मिच्छामि दुषट् ।

—ॐ—

(सुगह के देवचन्दन के अन्त में “मन्त्रहविषाणम्” की मज्जाय को । पहिले गुमाममण नेकर एक नमस्कार गिनकर फिर सम्झाव करना, मन्त्राहून और सायकाल में मज्जाय नहीं करना)

इच्छामि गुमाममणो यदिउ जारणिज्जाण निमीहि-
आण मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकरेण सदित्थ मगरन् !
मज्जाय रू १ “इच्छ”

नमो अग्निहताण । नमो मिद्धाण । नमो आयरियाण ।
नमो उज्झायाण । नमो लोण मज्जमाहण । नमो पच नमु-
कारो । सत्तपाणप्पणामणो । मगलान् च सवेमि पढम
हउ मगल ॥१॥

अथ मन्त्रह विषाण मज्जाय ।

मन्त्रह विषाणमाण, मिच्छ परिहरह घरह सम्मत ।
छन्दिह आरस्मयम्मि, उज्जुत्तो होइ पढदिम ॥ १ ॥
पवेसु पोमदणय, दाण सील तरो अ माओ अ ।
सज्जाय नमुकारो, परोवयारो अ जपणा अ ॥ २ ॥

निष्पृथा निष्पृगुण, गुरुधुम माहम्मियाग वन्द्य ।
 वरदागम्य य मुर्छी, रहजता निथनता य ॥ ३ ॥
 उरसम रिबम सवर, मामागमिर्द छनीर कम्पा य ।
 धम्मिथजयमममो, ररगदमो चरतापगिलामो ॥ ४ ॥
 सपोवरि बहुमामो, पुत्थयलिदग पमारता निथ ।
 सद्दहाण निथमेय, निर मुगुव०सेण ॥ ५ ॥ इति ॥

—ॐ ॐ ॐ—

॥ श्री पर्युषण पर्य का चैत्यरन्दन ॥

पर्य पर्युषण गुणनीलो, नर कल्प विहार ।
 चार मामातर स्थिर रह, परीच अर्थ उदार ॥ १ ॥
 व्यापाद शुद्ध चौदण धरी, मरुगरी पचाय ।
 मुनिर दिन मीनेरमे, पडिषपता चउमाम ॥ २ ॥
 गानर पण समता धरी, नर गुम्ता बहुमान ।
 वन्पणर सुमिदिन मुने, सामले यद एरनान ॥ ३ ॥
 निनर चैत्य जुहारीये, गुम्भजि रिनाल ।
 प्राये अष्ट मयातरे, वरीच शिर वरमाल ॥ ४ ॥
 दर्पणथी निज रूपनो, जुए मुदष्टि रूप ।
 दर्पण अनुभव अर्पण, गानरमण मुनि भूप ॥ ५ ॥
 आत्मस्वरूप रिलोकता, प्रगट्यो मिर स्वमार ।
 राय उदायी सामणा, पर पर्युषण दार ॥ ६ ॥
 नर वसाण पूनी सुखो, शुक्ल चतुर्थी ॥ इति ॥

पचमी त्रिं बापे मुणै, होय त्रिरोपी नीमा ॥ ७ ॥

॥ नहीं परे पचमी, मर ममाणी चौध ।

भरभीरु मुनि मानणे, माग्यु अरिहा नाथे ॥ ८ ॥

श्रुत करली वषणा मुणी, लही मानर अमतर ।

श्री शुभ रीगने शासनै, पाभ्या जय जयहार ॥ ९ ॥

॥ श्री वीण म्यानरु तर चैत्यरन्दन ॥

पहले पद अरिहत नष्ट, वीण मर मिद्ध ।

रीने प्रचन मन धरो, आचारन मिद्ध ॥ १ ॥

नमो वराह पादमे, पाटक गुण छट्टे ।

नमो लोच मन्त्र मादण, जे छ गुण गरिद्धे ॥ २ ॥

नमो नागुस्य आठमे, दर्शन पद प्यारो ।

विनय करे गुणवतनो, चारित्र मन मारो ॥ ३ ॥

नमो वमयष धारिण नेम मरिषाण ।

नमो तपस्व चांदमे, गोपम नमो त्रिपाद ॥ ४ ॥

चारित्र ताना शुभस्सने ए, नमो त्रिपाद ॥ ५ ॥

विन उतम पद पयने, नमता होय मुद्ध ॥ ६ ॥

॥ दूत विविधा चैत्यरन्दन ॥

दुवित्र धर्म निणे उपरिग्यो, वीण छट्टे ।

वीज जन्म्या ते प्रभु, मर दुष्ट छट्टे ॥ ७ ॥

१ धारिण । २ उपरिग्यो । ३ छट्टे । ४ छट्टे । ५ छट्टे ।

अथवा भुत-मिहानु जो ८४ छट्टे ॥

द्रविध ध्यान तम परिहरो, आत्मे दोष ध्यान ।
 इम प्रसारयु सुमति निने, ते चरिया बीज दिन ॥ २ ॥
 दोष उधन राग द्वेष, तहने मति तजीये ।
 मुज परे शीतल निन रुहे, बीज दिन शिव मजीये ॥ ३ ॥
 जीराजीव पदार्थनु, करो नाग मुजाण ।
 बीन दिने घामुपूज्य परे, लहो केवलनान ॥ ४ ॥
 निजवय ने ध्यग्रहार दोष, ण्हाते न ग्रहीये ।
 अरपिन बीन दिने चवी, ण्मजन आगल रुहीये ॥ ५ ॥
 वर्तमान चोरीशीण, ण्म जिन कल्याण ।
 बीन दिने केड पामीया, प्रमु नाण निर्माण ॥ ६ ॥
 ण्म अनत चोरीशीण, हुथा उद्द कल्याण ।
 पिन उत्तम प पन्नने, नमता होय सुख राण ॥ ७ ॥

॥ पचमी का चैत्यवन्दन ॥

त्रिगंडे नेठा धीर जिन, भावे मरिचन आगे ।
 त्रिस्तरणशु त्रिहुँ लोक जन, निमुखो मन रागे ॥ १ ॥
 आराधो मली भातसे, पाउम अनुयाली ।
 ज्ञान आराधन कारणे, ण्दज त्रियि निहाली ॥ २ ॥
 ज्ञान पिना पशु सारिया, जाणो एणे ससार ।
 ज्ञान आराधनधी लहे, शिखर मुण श्रीकार ॥ ३ ॥
 ज्ञान रहित त्रिया कही, काम कुमुम उपमान ।
 लोकालोक प्रमाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥

ज्ञानी यासोधासमा, करे रम्यनो छेद ।
 पूर्ण कोटी बरसा लगे, अचानी करे तेह ॥ ५ ॥
 दश आराधक क्रिया रही, मर्माधाराधन ज्ञान ।
 ज्ञान तणो महिमा पणो, अग पाचमे भगवान ॥ ६ ॥
 पच मान लघु पचमी, जायाजीय उरहृष्टी ।
 पच वग्न पच मामनी, पचमी रगे शुभ दृष्टि ॥ ७ ॥
 एकाग्र ही पचनो ए, साउस्मग्ग लोमस्म केरा ।
 उजमणु रगे मायशु, टालो भर फगे ॥ ८ ॥
 ण्णी पर पचमी आराधीण, आशी भाव अपार ।
 बरदत्त गुणमनरी परे, रगविनय लहो माग ॥ ९ ॥
 ॥ १ ॥ अष्टमी चैत्यनन्दन ॥
 माह शुदी आठम दिने विजया सुत जापो ।
 तैम फागण शुदि आठमे, ममव चरी आच्यो ॥ १ ॥
 चैत्र गदिनी आठमे, जन्म्या श्रवण जिनद ।
 दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचद ॥ २ ॥
 मायन शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्पा हर ।
 अभिनन्दन चौथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥
 एहीन आठम उजली, जन्म्या मुमति विनद ।
 आठ जाति फलशे ररी, नगरावे सुर उद ॥ ४ ॥
 जन्म्या जेठ चदि आठमे, मुनिसुत्रत स्वामी ।
 नेम अषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
 आश्विन-वदनी आठमे, नमि जन्म्या लग

तम आरण शुचि आठमे, पातनीनु निग्याण ॥ ६ ॥
 भाद्रमा उदी आठम दिने, चत्रिपा स्वामी सुषाम ।
 जिन उत्तम पद पडने, सेयावी शिरगास ॥ ७ ॥

॥ श्री एकादशी का चैयन्दन ॥

शासन नायक गीरजी, प्रभु कैवल पायो ।
 सध चतुरिग थापना, मठसेन घन आषो ॥ १ ॥
 माधव मित एकादशी, मोमिल द्विज यज्ञ ।
 इन्द्रभृति आदि मन्या, एकादश दिन ॥ २ ॥
 एकादशमो चउ गुणा, नेहनो परिहार ।
 वद अर्ध अग्लो कर, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥
 जीवात्मिक सशय हरी, एकादश समुधार ।
 वीर धाप्या वदीय, जिनशासन अपकार ॥ ४ ॥
 मल्लि चन्म श्वर मल्लि घाम, वर चरण विलासी ।
 श्वरम अचिंत सुमति नमि, मल्लि घनघाती विनागी ॥ ५ ॥
 पद्मप्रभ शिर घास पास, मय-मयना तोडी ।
 एकादशी दिन आपणी, श्वद्धि मघली जोडी ॥ ६ ॥
 दग क्षेत्रे त्रिहू रालना, जणसे वन्याण ।
 वरम अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥
 अगीपार अग लग्गारिये, एकादश पाठा ।
 पुत्रणी टरणी वीदणी, मरी कागल ने काठा ॥ ८ ॥
 अगीपार अगउ आडवा ण, चहो पडिमा अगीपार ।

सुमतिविजय निनशामने, मदन रुगे अतार ॥ ६ ॥

॥ सिद्धचमड़ी का चैत्यमन्दन ॥

पदले पद अश्रितना, गुण गाओ नित्य ।

पाजे सिद्ध तणा घणा, ममगे पद गिने ॥ १ ॥

आचारन गीने पद, प्रथमो सिद्ध कर चोडी ।

नमीये श्रीउभयपने, चोथ मम मोडी ॥ २ ॥

पचम पद मर साधुनु, नमता न आणो लान ।

७ परमेष्ठी पने, घ्याने अचल रान ॥ ३ ॥

दसण-गमादिक रहित, पद छडे धामे ।

सर्व नाण पद सातमे, चण पद न गिमारो ॥ ४ ॥

चारित्र चोखु चित्तधी, पद अष्टम जर्पाय ।

मरुत भेद बीच दान-फल, तप नमने तपीरे ॥ ५ ॥

९ सिद्धचम आगधता, पूर गठिने मोड ।

सुमतिविजय मरिरायनो, राम गहे कर जोड ॥ ६ ॥

॥ दीवाली का चैत्यमन्दन ॥

सिद्धार्थ तप कुल-तिलो, मिशला जस मान ।

हरि लटन तनु भात हाथ, महिमा गिरयात ॥ १ ॥

ग्रीश वरस गृहवाप छडी, लिय मयम भार ।

गारा वरस उग्रम्य मान, लही करल सार ॥ २ ॥

ग्रीश वरस पम मरि मली, गहोतर आयु प्रमाण ।

दीवाली दिन शिर गपा, नय कहे ते गुण खण ॥ ३ ॥

॥ श्री पयुपण पर्ब का स्तवन ॥

पुण्यजो सावन मत पनुमण आचार, तमे पुन्य करो पुन्यवत,
 मविक मन भायारे, (आकणी)
 धीर निखेसर अति अलवेसर, गढाला मारा परमेश्वर एम बोले रे
 पर्ब माहे पनुसण महोटा, अवर न आवे तम लोले रे,
 पनुसण आचार रे, तमे० १

चउपद माह जेम केसरि मोटो, वा० उगमा गरुड कडीण रे,
 नदी माहे जेम गगा महोटी, नगमा मेरु लहीए रे, प० २
 भूपतिमा मरतेसर भाग्यो, वा० दवमाहे सुर इन्द्र रे,
 तीरथमो शेनुजो दारवो, ग्रहगणमा जेम चन्द्र रे, प० ३
 दशरा दीयाली ने उली होली, वा० अणारीच दीरामो रे,
 पलेन प्रमुख बहुला छे बीजा, पण नहीं मुक्तिनो वामोरे प ४
 ते माटे तम अमर पलायो, वा० अट्टाह महोत्सव कीजे रे,
 अट्टम तप अधिकाहए करीने, नरमर लाहो लीजे रे, प० ५
 दोल ददामा मेरी नफेरी, वा० कल्पसूत्र ने जगानो र,
 भाभरना भमकार करीने, गोरीनी टोली मली आयोरे, प० ६
 सोना रूपाने फूलडे उधावो, वा० कल्पसूत्रने पूजो रे,
 नर वराण निधिए सामलता, पाप मेवामी धूजे रे, प० ७
 एम अट्टाईनो महोत्सव करता वा० बहु जीव जग ठहरियारे;
 त्रिषुध विमलवर सेरक एहथी, नगनिधि अदि सिद्धि
 वरियारे, प० ८

सम लो स्वाद, चीबने संतोष रस कीजिये जी ॥१०॥
 जी० पीज फरो दोय मास, उरुष्टी बाकीश मामनी जी ।
 जी० चोविहार उपगम, पालिये शील वसुधासनी जी ॥११॥
 जी० आरश्यक दोय वार पडिसेहण दोय लीजिये जी ।
 जी० देवदत्त ग्रण फाल, मन वच कायाए कीजिये जी
 ॥१२॥ जी० उनमणु शुभ चित्त, ऊरी घरिये सयोगधी
 जी । जी० चिनगणी रस एम, पीजिये श्रुत उपयोगधी
 जी ॥१३॥ जी० इण गिधि करिये हो पीज, राग ने द्वेष
 दूरे करी जी । जी० केनलपद लही ताम, बरे मुक्ति उलठ
 घरी जी ॥१४॥ जी० जिनपूजा गुरुभक्ति, गिनय करी सेवो
 सदा पी । जी० पप्रमिजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख सपदा
 जी ॥१५॥

॥ ज्ञानपंचमी का स्तवन ॥ ७

मुक्त सिद्धार्थ भूपनो रे, सिद्धार्थ भगवान । बारह परखदा
 आगले रे, माखे श्री वर्धमानो रे; मरियण चित्त घरो, मन
 वच कय अमायो रे; ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आकर्णी ॥१॥
 गुण अनन्त आत्म वशा रे, मुरपणो विहा दोय । तेहमा
 पण नानन बडु रे, निणयी दरसण होय रे, म० ॥२॥ ज्ञाने
 चारित्र गुण वषे रे, नाने उद्योत सहाय । ज्ञाने विनिम्पणु
 लहे रे, आचारज उभाय रे; म० ॥३॥ ज्ञानी आसो आसमा
 रे, फटिन करम करे नाश । बडि जेम इन्वन दहे रे,

चणमा च्योति प्रभाशो रे, म० ॥४॥ प्रथम नान पञ्जी दया
 रे, सवर मोह विनाश । गुण ठाखेंग पण चालीये रे, जेम चढे
 मोव आगामो रे, म० ॥५॥ मड मुम ओहि मणपञ्जरा रे
 पेचम फेरलनान । चउ भुगा म्रुत एक छे रे, स्व पर,
 प्रभाश निदानो रे, म० ॥६॥ तेहना साधन जे कर्शा रे,
 पाटी पुस्तक आदि । लखे लखावे साववे रे, घर्मी धरी
 अप्रमादो रे, म० ॥७॥ त्रिभि आशावना जे कर रे,
 भणता करे अतराय । अधा बहरा गेरडा रे, भुगा पागला
 थाय रे, म० ॥८॥ मणगा गुणगा न आयड रे, न मले
 चल्लम चीज । गुणमजरी बरदत्त परे रे, छान विराधन
 चीज रे, म० ॥९॥ ग्रंमे पूडे पारुदा रे, प्रणमी जग-
 गुरु पाय । गुणमजरी बरदत्तनो रे, कडो अधिकार
 पमायो रे, म० ॥१०॥

॥ अष्टमी का स्तवन ॥

हारे मारे टम धरमना माडा पचमीग दग जो, दीप रे त्या
 देश प्रगथ सहमा शिरे रे लोल । हा रे मारे नगरी
 तेहमा गजगुरी मुनिशेव जो, राजे रे त्या श्रेष्ठिक गान
 गज परे रे लोल ॥१॥ हा रे मारे गाम नगर पुर 'पारन
 करता नाथ जो, विचरंता त्या अमी धीर समोसर्पा र लोल
 हा रे मारे चउद सहम मुनिवरनो साव । साय जो, सुधा र
 सप सयम शियले अलक्या रे लोल ॥२॥ हा रे मारे

फूल्या रसभर भूल्या अरु कटव जो, जाणु रे गुणशील
 वन हसी रोमाचियो रे लोल । हाँ रे मारे बापा बाप
 मुयाप तीहा अत्रिलंग जो, गासे रे परिमल चिहु पासे
 सचियो रे लोल ॥ ३ ॥ हा रे मारे देव चतुर्विध आवे फोडा
 फोड जो, त्रिमहु रे मणि हेम रजतनु ते रचे रे लोल ।
 हा रे मारे चोसठ सुरपति सेवे होडाहोड जो, आगे रे रस
 लागे इद्राणी नचे रे लोल ॥ ४ ॥ हाँ रे मारे मखिमय
 हेम सिंहासन बेठा आप जो, ढाले रे सुर धामर मखिरत्ने
 जड्यौ रे लोल । हाँ रे मारे सुखतौ दु दुमि नाद टले सवी
 ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानु अट्यौ रे लोल ॥ ५ ॥
 हाँ रे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम लु ब जो, राजे रे
 जिनगाज समाजे धर्मने रे लोल । हाँ रे मारे निरखी हरणी
 आवे जन मन लु ब जो, पोपे रे रस न पडे घोरे धर्मने
 रे लोल ॥ ६ ॥ हाँ रे मारे आगम जाणी जिननौ श्रेष्ठिक
 राय जो, आन्यो रे परिवारियो हय गय रथ पायगे रे लोल ।
 हाँ रे मारे दह प्रदक्षिणा बदी बेठो ठाय जो, सुणया रे
 जिनवाणी मोटे भागीये रे लोल ॥ ७ ॥ हाँ रे मारे त्रिभुवन
 नायक लायक नय मगरन जो, आखी रे जन करुणा ।
 धर्मरुपा कह रे लोल । हाँ रे मारे सहज विरोध बिसारी
 जगना जतु जो, सुणवा रे जिनयोणी मनमा गहगहे
 रे लोल ॥ ८ ॥

॥ पञ्चदशी का स्तवन ॥

ममवसरण वग मयउत, धर्म प्रकाशे श्रीयस्वित ।
 धार परपदा चेटी श्री, मागमिर शुदी धर्मीधारस बडी
 ॥ १ ॥ मल्लिनाथना वान कन्याण, जन्म दीदा ने केवलनाण ।
 धरजिन दीदा सीकी श्री, मागमिर शुदी धर्मीधारस बडी
 ॥ २ ॥ नमिने उपजु कवलवान, पांच कन्याणक अति-
 प्रधान । ए तिथिना परिमा बडी माग० ॥ ३ ॥ पांच
 भरत ऐरावत इमही ज, पांच कन्याणक हुए निमही ज ।
 पचामनी सरया पगरी माग० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत
 गख ॥ एम, दोदमो कन्याणक पाय तेम । कुण तिथि छ
 ए तिथि जे बडी, माग० ॥ ५ ॥ अनन चोरीजी इन पने
 गणो, लाभ अनत उस्ताव वया । ए तिथि मद्र गिर ०
 खडी, माग ॥ ६ ॥ बीनाख रया श्रीमल्लिनाथ, ए
 दिनम संयम नन माग । पंत कर्षी पने नन इम बडी,
 माग० ॥ ७ ॥ धातु काँ धनद सीजिन, चौबिस
 त्रिविधु कीजिय । एव अण ने चीन धरी, माग० ॥ ८ ॥
 वर्ष इग्यार कीजे उपमा, जो अब पण धरिद उन्न ।
 ए तिथि मोच नली पार, माग० ॥ ९ ॥ उजकत धर
 श्रीकार, प्रानोपगमण इग्यार । उगे काउजकत उ
 पाय पडी, माग० ॥ १० ॥ स्नाय कविने रत्ना,
 पोथी पूजिने मन रत्नी । कीजे ०

॥ ११ ॥ मौन थग्यारस मोडु पर, आगथ्या मुग लहीये
 सर । उत पवनपुण कये भासडी, माग० ॥ १२ ॥
 जेमल सोल इस्यामी समे, कीधु स्वरन सहु मन गमे ।
 समयसुन्दर कहे दहाडी, माग० ॥ १३ ॥

॥ श्री बीश स्थानक स्वरन ॥

हारे मारे प्रणमु सगम्बती मागु वचन विलासजो,
 बीशारे तप स्थानक महिमा गार्डशु रे लोल ॥ हारे मारे
 प्रथम अरिहत पद लोगस्स चौरीमजो, बीनेरे सिद्ध स्था-
 नक पकर मागशु रे लोल ॥ १ ॥ हा० श्रीने पवपणमु
 गणशो लोगस्स साउजो, चउधेरे अयरियाण छत्रीमनो
 सहीरे लोल ॥ हा० ॥ बेराण पद पचमे दस उदारजो, छट्टेरे
 उवजभायाण पचरीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हा० सातमे
 नमोलोय सत्रमाहु सतारीसनो, आठमे नमो नाणस्स पंचे
 मागशु रे लोल ॥ हा० नउमे दरिमण सडतठ मनने उदारजो,
 दशमे नमो त्रिणयस्स दम वटाणीएरे ॥ ३ ॥ हा० अगी-
 थारमे नमो चारितस्स लोगस्स सतरजो, पारमे नमो
 पमस्स नउगुणे सहीरे लो० ॥ हा० ॥ कीरियाण पदतेरमे
 वली पचरीमजो, चउदमे नमो तवस्स चार गुणे सहीरे
 लो० ॥ ४ ॥ हा० पंदरमे नमो गोयमस्स अहारीमजो नमो
 जिणाय चउरीस गणशु सोलमेरे लो० ॥ सत्तरमे नमो
 चारित लोगस्स सिचेर जो, नाखस्सनो पद गणशु प्यावन

अडाग्येरे लो० ॥ ५ ॥ हा० योगार्गममे नमो मुखस्म गीम
 पीसालीमयो, बीममे नमो त्रिबन्ध बीम भागपुरे लो० ॥
 हा० तपनो मदिमा चारमे टपर बीमजो, पटमासे एरु थोली
 पूरी कीडिणे लो० ॥ ६ ॥ हा० तप करतां वली गणीधे
 -दोपदत्त जो, नवकारगाचो गीस ध्यानक भागपुरे लो० ॥
 हा० प्रमायना मघ स्वामी वच्छल सारजो, उजमणी त्रिभि
 -कीनिण दिनय लीडिणे लो० ॥ ७ ॥ तपनो मदिमा पागे
 श्री चीर जिनरायजो, विदुतरे इम सवध सोयम एरागिरेरे
 लो० ॥ हा० तप करतां वली तीवकर पद दोपजो, दवगुह इम
 पात्रि रावन सोदामणारे लो० ॥ ८ ॥

॥ श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री श्री पालवुमार ज्वेत्वरुर्ग अरिदत्त आराधे, पीतगम
 आतम गुण साधे, अमृतदश मस्त जार ॥ श्री १ ॥ सिद्ध पृथ
 परमात्मा ध्याये, रत्नवर्ण आलवन पाये, सिद्ध आठ गणधार
 ॥ श्री २ ॥ दुर्नीम गुण आचारज सोड, पीत वर्ण ध्याये
 मन मोहे, स्वपर सारणहार ॥ श्री ३ ॥ पदे-पदारे योग्य
 बनारे, नील वरुण आतम गुण गावे पाठक पद अवधार
 ॥ श्री ४ ॥ पंचम पद जो मोर से मजीए, स्वाम वरुण
 सर पांष जो तनीए, धन माधु अणुगार ॥ श्री ५ ॥ दर्शन
 ज्ञान चरण तप चारे, ज्वेत्वरुर्ग साधन अरघारे निश्च
 और व्यवहार ॥ श्री ६ ॥ सिद्धचक्र गुण गावे भावे, आत
 लक्ष्मी-ईर्ष मनावे, वल्लभ जय जयकार

॥ दीवाली स्तवन ॥

ज्यो जगन्नामी वीरजिन्द ॥ टे ॥ नगर अषाषा
 में प्रभु आये, मज्जन को उपकार करद ॥ ज० १ ॥ निज
 निरवान समय मे जानी, सोला पहर प्रभु घर्म कहद
 ॥ ज० २ ॥ कार्तिक वदि पदरसनो राने, प्रात काल प्रभु
 मुक्ति सहद ॥ ज० ३ ॥ कमाहमा पद छिनरु में लीनो,
 आठ कर्म को दूर हरद ॥ ज० ४ ॥ कन्याणरु निर्माण
 मोहत्सव, काण्ण मिलरु आर्य सुरींद ॥ ज० ५ ॥ पाषा
 नगरी नाम कडायो, अस्त मयो निडा वान दिनद
 ॥ ज० ६ ॥ नय भली नय लेन्नी राजा, जोरु अतिशय
 दिल में घरद ॥ ज० ७ ॥ भाव उद्योत गया अव जगसे,
 द्रव्य उद्योत को दीप करद ॥ ज० ८ ॥ जिस कारण
 दीवाली होइ, ध्यान घरोप्रभु वीर जिन्द ॥ ज० ९ ॥
 कार्तिक सुदि एकम दिन थावे, गौतम रेगल ज्ञान गहद
 ॥ ज० १० ॥ आत्मराम परमपद पावे, वल्लभ चित्तमें हर्ष
 अमद ॥ ज० ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचल जी का स्तवन ॥

जात्रा नगणु करीए, गिमल गिरि जात्रा नगणु
 करीए । पुर्व नगणु बार शत्रु जय गिरि, अष्टमनिशद
 समोसरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोटि सहस्र भय पातक-शुटे,
 शत्रु जय सामाहम भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सप्त छट दोष

अटम नश्या र्ग चटिण गिरिवरीए ॥ वि० या० ॥३॥
 पु डरिक पद जपिए मन हाम्मे, अघ्यवमाय शुभ घरीए ॥
 वि० या० ॥४॥ पापी अमन्य न नवर दमे हिमक पण
 उदगी ए ॥ वि० या० ॥५॥ भूमि मथारे ने नागी तणो
 मग, दूर थकी पगी हगीए ॥ वि० या० ॥६॥ एकल
 आहारी ने सचित्त पगिहरी, गुन माव पट चगए ॥ वि०
 या० ॥७॥ पडिकमणा दोष त्रिचिनु जगए, पापपडल
 परिहरीए ॥ वि० या० ॥८॥ कलिकाले ए तीर मोडु,
 प्रवहण जेम भवदगीए ॥ वि० या० ॥९॥ उत्तम ए गिरिगर
 सेवता पन्न रह मय तरीए ॥ वि० या० ॥१०॥

पशुपण पद का स्तुति

सत्तर मेदी जिन पूजा रचीने, स्नात महोत्सव रीन जी ।
 ढोल दमामा मेरी नकरी, झडगी नाट सुणीने जी ॥
 वीर जिन आगल भायना भावी, मानव मय फल लीजे जी ।
 पर्व पशुमण, पूरय पुण्य, आर्या णम जालीने जी ॥१॥
 मास पास वली दमम दुवालम, चत्तारि अठ कीने जी ।
 उपर वली दश दोष करीने, जिन चोवीश पूजीन जी ॥
 बडा कल्पनो छड करीने, वीर बखान सुणीने जी ।
 पदवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी ॥२॥
 आठ दिउम लगे अमर पलावी, अद्वमनो तप कीने जी ।
 नागकेतुनी परे केवल लहीये, जो शुभ माव

तेलाधर तिन वरु रन्ध्यासक, गणपतराट रदीजे जी ।
 पाम नेमीमर अतर तीज, प्रथम चरित्र सुमीज जी ॥३॥
 बारसा सुत्र ने मामाचारी, सत्रच्छरी पटिवमिये जी ।
 चैत्य प्रयाडी विधिशु कीज, मरुल जतु म्यामीजे जी ॥
 पारणाने दिन स्वामीरुमल, रीजे अविकर उडाई जी ।
 मानविजय कह सकल मनोरथ, पूरे देगी सिद्धायी जी ॥४॥

दूज विधि की स्तुति








दिन मरुल मनोहर, बीन दिरस सुनिगेष । राय राणा
 प्रथम, चन्द्र तणी जिहा रेख ॥ तिहा चन्द्र रिमाने, शाश्व-
 ता चितर जेह । हुँ रीज तणे दिन, प्रणमु आणी नेह ॥१॥
 अमिन्दन चन्दा, शीतल शीतलनाथ । अरनाथ सुमति
 चिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनरर, जम
 ज्ञान निर्माण । हुँ तीन तणे दिा, प्रणमु ने सुनिहाण ॥२॥
 परकाज्यो गोज, दुविध धर्म भगवत । जेम निमल कमल
 दोष, विपुल नयन विरुमत ॥ आगम शक्ति अनुपम, तिहा
 निश्चय व्यरहार । बीने रनी कीजे, पावरुनो परिहार ॥३॥
 गनगामिनी कामिनी, रमल सुकोमल चीर । चक्केमरी
 रेमर, मरम सुगध शरीर ॥ कर जोडी बीने, हुँ प्रणमु
 तम पाप । एम लविजय कहे, पूरे मनोरथ माय ॥४॥

॥ पचमी की स्तुति ॥

आरय शुचि दिन पचमीये, जन्म्या नेमि जिणद तो ।
 श्याम वरुण नर जोमान न मरुल जतु म्यामीजे जी ॥

सदम वरस प्रभु आउगु ए, उल्लचारी भगवत तो । अष्ट
काम हले हणीण, पढोता मुक्ति मढत तो ॥१॥ अष्टापद पर
आदि चिन् ए, पढोत्या मुक्ति मोक्षार तो । वामु पूज्य
चषापूरी ए, नेमि मुक्ति गिरनार तो ॥ पायापूरी नागीमा
बली ए, श्री वीर नगु निर्माण तो । सम्मेतशिखर रीश
सिद्ध हुआ ए, शिर उहुँ तेइनी ध्याण तो ॥२॥ नेमिनाथ
झानी हुआ ए, भारे सार वचनता । जीव दया गुण बेलटी
ए, फीजे ताम जतन तो ॥ सृष्टा न बोलो मानसी ए, चोरी
चित्त निवार तो । अनत तीर्थकर इम भणे ए, परिहर्गरे
पन्नार तो ॥३॥ गोमघ नामे यक्ष मल्लो ए, दर्वा श्री अविद्य
नाम तो । जामन मानिय ज कर ए, कर रली उम्ह
राम तो ॥ तपण उ नापक मुणनीलो ए, श्री रिद्धर
सुरिदाय तो । नृपभदाम पाय सेवता ए, सद्धर
अवनार तो ॥४॥

अष्टमी की स्तुति

मंगल आठ री जम आगल, भाव  ई
आठ जातिना नलश भरीने, नमरा  ई ।
वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव करता शिव  ई
आठमनो तप उता अम धर, नगल  ई ।
अष्ट रुम यगि गज गजन, अष्ट  ई
आठमे आठ सुरूप विचारी, म  ई ।
अष्टमी गति जे पढोता जिनार,  ई

आठमनो तप करतीं अम घग्, नित नित राधे रम जी ॥२॥
 प्रातिहारज आठ गिराजे, ममयसग्न चिन गजे जा,
 आठमे आठसो आगम भागी, भगी मन मगय भाज जी ।
 आठे जे प्रचननी माता, पाले निरनिचारे जी ।
 आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीउ दया चिन धामे जी ॥३॥
 अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव भर फल लीने जी,
 मिट्ठाई देवी जिनवर सेवी, अष्ट महामिद्रि दीज जी ।
 आठमनो तप करतीं लीजे, निमल केवलनाथ जी,
 धीरविमल रुचि सेवक नय रुहे, तपथी कोइ कन्याण जी ॥४॥

एकादशी की स्तुति

एकादशी अति रूथडी, गोरिंद पूछे नेम, मोख कारण ए
 पर्व महोदु, कडो मुजशु तेम । जिनवर कन्याणरु अति
 घणा, एक सो ने पचाम, सीखे कारण ए पर्व महोदु,
 करो मान उपवास ॥१॥ अगीपार आवक तखी प्रतिमा, रुही
 ते जिनवर दव, एकादशी एम अधिक मेरो, रनगजा जिम
 रेव । चौबीश जिनवर तयल सुखर, जैमा सुरतरु चम
 जेम गग निमल नीर जेहवो, करो जिनशु रग ॥२॥
 अगीपार अम लखारीये, अगीपार पाठा मार, अगीपार
 कवली वींटणा, ठवणी पुजणी सार । चावली चगी विविध
 रगी, शास्त्र तखे अनुसार, एकादशी एम उजवो, जिम
 पामीये भवपार ॥३॥ चर कमल नयणी कमल ययणी,

कमल मुमैमल माय, मुन २६ वट दण्ड केने, न
 ना सुख थाय । एकाग्रगी एम मन रत्ने, रत्ने नें न
 शिष्य शामन दरी पिघन निरागे ॥ २७ ॥

मिद चरनी हं ॥ २८ ॥

॥ श्री गीश स्थावर पद की स्तुति ॥

पूछ गौतम वीर निखदा, समउत्तरण उठा मुग्धदा, पणित
 थमर सरिदा । कैम निरुपे पद निनचदा, मिश्रविध तप
 फरता मन फदा, टले दुरितहृददा ॥ तब भावे प्रभुनी गत
 निदा, सुख गौतम वसुभूति नदा, निमल तप थरदिदा ।
 वीश स्थानक तप रर मेहदा निम तारक ममुदाय चंग, निम
 त तप सवि इदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिहत मरीजे, गीजे
 सिद्धपरयण पद गीजे, आचारज भर टगीजे । उपाध्याय ने
 माधु ग्रहीज नाणदमण पद निनय वहीजें, अग्नियारने चारि
 लहीजे ॥ २ ॥ भयपधारिण गणाच, किरियाण तरस्म करीजे,
 गोयम जिगाण सगीजे । चारि नारा अतु तित्तस्स गीजे
 गीजे भा तप करत मुणीचे, ए सवि निन तप लीजे ॥ ३ ॥
 आदि 'नमो' पद सत्रले ठगीश, गार पत्र रली वार छगीश,
 दश पणगीश सगगीश, । पाच ने मडमठ तेर गणीश,
 सित्तेर नर किरिया परगीश, गार अट्टगीश चोरीम ॥
 सतरा एकावन पीस्तालीश पाच लोगम्म ऊउस्सम्म
 रहीश, नयमातवाली गीश । एक एक पद उपवाम ज वीश,
 माय छण एक ओली वरीश, णम सिद्धात जगीश ॥४॥
 शक्ते णमणु तिमिहार, उट्ट अट्टम मायउमण उदार,
 पक्कमणु दोय वार । इत्यादि विवि मुख्यम धार, एक
 पद आराधन मन पार, उजमणु विविध प्रकार ॥ मातम

यत्तु ररे मनाहार, दर्शी मिद्विड शामन समाल, विघ्न
मिद्वारण हार । श्रीमन्निजय नत्त उपर प्यार, शुभ मरियण
धर्मा आहार, श्रीमन्निजय जयहार ॥४॥

श्रीराली की स्तुति

मनोहर मूर्ति महारीग नर्मी, जिसे मोल पहोर दशना
पमर्मी । नर मर्त्री नर लच्छी नपनि मुर्णी, कही गिर
पम्प । त्रिगुन घणी ॥१॥ गिर पशता अपम चउदश
भैस्त, नारीश लया गिर माम चित । छट्टे गिर पाम्पा वीर
वली, कर्तिक वरी अमारम्पा निर्मली ॥२॥ आगामो भारी
मार कथा, श्रीराली कन्प जेद लया । पुण्य पाप फल
अङ्गपणे कथा, मया महति कर्माने मदया ॥३॥ मरी
दर मिली उग्रोत्तर कर, परमाने गौम जान रर । जानिमन
मन्गुल विम्भरे, निजशामनमा जयहार कर ॥४॥

श्री उपमान की स्तुति ।

बार चिनेवन उपनिजे ण, माभतो भविद गुताग तो,
उपमान बिना ननि ररतो ण, गणतो श्री नरकार तो ।
गीतारथ गुरु योगी ण, रदाण शुद्ध उपमान तो,
किरीयानी आलोपण ण, लदीय मुगुरु पाग तो ॥१॥
पच मगलनु १ जाणीये ए, ण पदनु उपमान तो,
प्रतिमगणनु २ जाणीये ण, र बीजु उपमान ता ।

॥ श्री गीश स्थाक पद की स्तुति ॥

पूछे गौतम गीर जिणदा, समभरण बडा मुत्तभडा, ७ नित
 प्रमर छरिदा । केम निरुारे पद निनचदा, मिणमिध तप
 फरता भव फदा, टले दुरितह ददा ॥ तप भासे प्रभुची गत
 निदा, सुण गौतम वसुभूति नदा, निर्मल तप अरनिदा ।
 गीश स्थानक तप कर मेहदा जिम तारक ममुदाये चंदा, निम
 ७ तप सवि इदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिउत मर्गाजे, गीजे
 मिद्ध परयण पद गीजे, आचारज धर ठवीजे । उपाध्याय ने
 माधु प्रहीज नाणदमण पद विनय दहीजे, अगियाग्गे चारिउ
 लहीजे ॥ बभनयधारिण गणाने, किरियाण तउम्म करीजे,
 गोयम जिणाय लहीजे । चारि नाय उत तित्थस्स कीने
 गीजे भा तप उरत सुखीने, ए सवि विन तप लीजे ॥२॥
 आदि 'नमो' पउ मवने ठवीण, नर पउर उली नर छरीश,
 दश पणगीश सगवीण, । पाच ने मडमठ तेर मणीश,
 मित्तेर नर किरिया पचवीण, नर अट्ठारीश चोवीम ॥
 सतरा एकावन पीरतालीश पाच लोगम्म फाउस्सग्ग
 रहीण, नरकारउली गीश । एक एक पद उपवाम ज वीश,
 माम छए एक थोली उरीश, एम सिद्धांत जगीश ॥३॥
 शक्ते एसाणु तिविहार, उट्ट अट्टम मायउमण उदार,
 पक्किमणु दीय वार । इत्यादिउ विवि गुत्तम धार, एक
 पद आराधन भव पार, उवमणु विविध प्रकार ॥ मातग

पन कर मनोहार, दर्बी मिट्ठाड शायन गवाल, विघ्न
मिटाने हार । रीमाविलय नन उषा प्यार, शुभ भरियण
धर्मा यात्रार, रीमियाय जयहार ॥४॥

दीराली की स्तुति

मनाहर मूर्ति महारी नर्णी, जिसे सोल पहर देशना
पमणी । नर मल्ली नव लच्छी नृपनि सुणी, कदी शिर
पाम्या त्रिभुवन धणी ॥१॥ शिर पड़ोता श्रम बउदश
मन्ते, मारीग लया शिर माम चिने । छट्टे शिर पाम्या बीग
बली, फाँकि वनी अमारस्या निर्मली ॥२॥ आगामा मारी
भाउ रया, दीराली रूप लोह लगा । पुण्य पाप फल
प्रभयसे रया, मरी नदति करीने मदहा ॥३॥ मरी
त्व मिली उषा न कर, पगमाते गीम वान नर । ज्ञानरिमत
मनुग रिम्तर, जिन्नामनमा जयहार कर ॥४॥

श्री उपग्रान की स्तुति ।

बीर चिने न उपदिश न, यामलो भरि नृपचार तो,
उपग्रान बिना नवि नृप तो, गणसे श्री नमकार तो ।
गीतारथ गुण योगी न, उही नृप शुद्ध उपग्रान तो,
किरीयाना गालीय न, लड़ाये गुगुन पास तो ॥१॥
पच मगलनु (जाणीये न, ए पहलु उपग्रान तो,
प्रतिमखनु (जाणीये न, ए बीनु उपग्रान ता ।

चैत्य स्तम्भानु मार्गीय ॥ ७ चोथु उपधान तो,

मरी तीर्थंरु इम भणे ॥, उपधान करी उद्गमान तो ॥२॥

पूछे अनुस्तर मिद्रस्त ॥ ए, छट्टु उहो उपधान तो

अमरगम्भवनु जार्गीये ॥ घरीये ततीय ध्यान तो ।

फरवानाम स्तर लोगस्तर ॥, पाचमु शुभ उपधान तो

निंदार्थी महानिशीय मृन्मा ए, भाग्यु श्री जिनगव तो ॥३॥

वीश महा महोत्तर आरीय ए, श्री गुप्तरनी पाम तो,

॥ तंजाद महागो ठाठमु ॥, पधगर्जो जिनराज तो ।

सिद्धश्रीफल द्रव चडारीये ॥, माणिस्यादि माग तो,

माधुवम्यग् दष्टि मुरार सपी ॥, दरी मिद्रास्त्री महाय तो ॥४॥

रही

चैत्री पूनम री स्तुति ॥६॥

गोपगु डरीकपडण पाय पाय प्रणमी जे, आदीश्वर नि चदानी

रीजेतमि रिना रेरीश तीर्थंर, गिरि चट्टिया आखदा जी

आधिरागममहि पुडरीरु मदिमा, भाग्यो ज्ञान दिगुदार्जी

दश रैत्री पूनम निन दवी चक्केसरी, तांभाग्य दो सुखरुदार्जी ॥१॥

मिते १ अरिहंत चेइयाण २ अन्नत्थ । ३ पुक्करर । ४ मिद्रगा

सतरांझाण । ५ नमुत्थुण ।

रहीश यह स्तुति (थुर्) गार वायत भी क- मकते हैं ।

माम

शक्ते

पवि

पट ३



त्रिकाल-देवदन्दन विधि

मामापिष्ट पापघ विधि सहित

—३३—

प्रथम लेनेवालों की शुभ नामावली ।

पुस्तकें

श्रीमान् रूपचन्दजी मगगचर्जी मोचर	हैदराबाद	१२५
„ लन्मीचन्दजी घमालालजी कगगारट फलकता		१२५
„ हजारीमलजी मिस्तगचन्दजी रामपुरिया गीगनेर		४०
„ इन्दरचन्दजी भवरलालजी ढङ्गा बीगानर		२०
„ लन्मीचन्दजी फतेहचन्दजी कोचर	„	२०
„ सेठ कालीदाम जीवराज शाह पालनपुर		२०
„ गीर्दीदासजी पारमदामजी ढङ्गा जयपुर		२०
„ चा दमलजी चनममलजी कोचर	„	२०
„ नैमचन्दजी प्रेमचन्दजी कोचर	„	२०
„ रतनचन्दजी हीराचन्दजी मोचर	„	२०
„ नीरतनमलजी ढङ्गा	„	२०
„ रूपचन्दजी धाढगाल	प्रतापगढ़	२०